सितम्बर-२०१९ ◆ वर्ष ८ ◆ अंक ०४ ◆ उदयपुर

ओ३म्

# सत्यार्थ सौरभ

मासिक

सितम्बर-२०१९

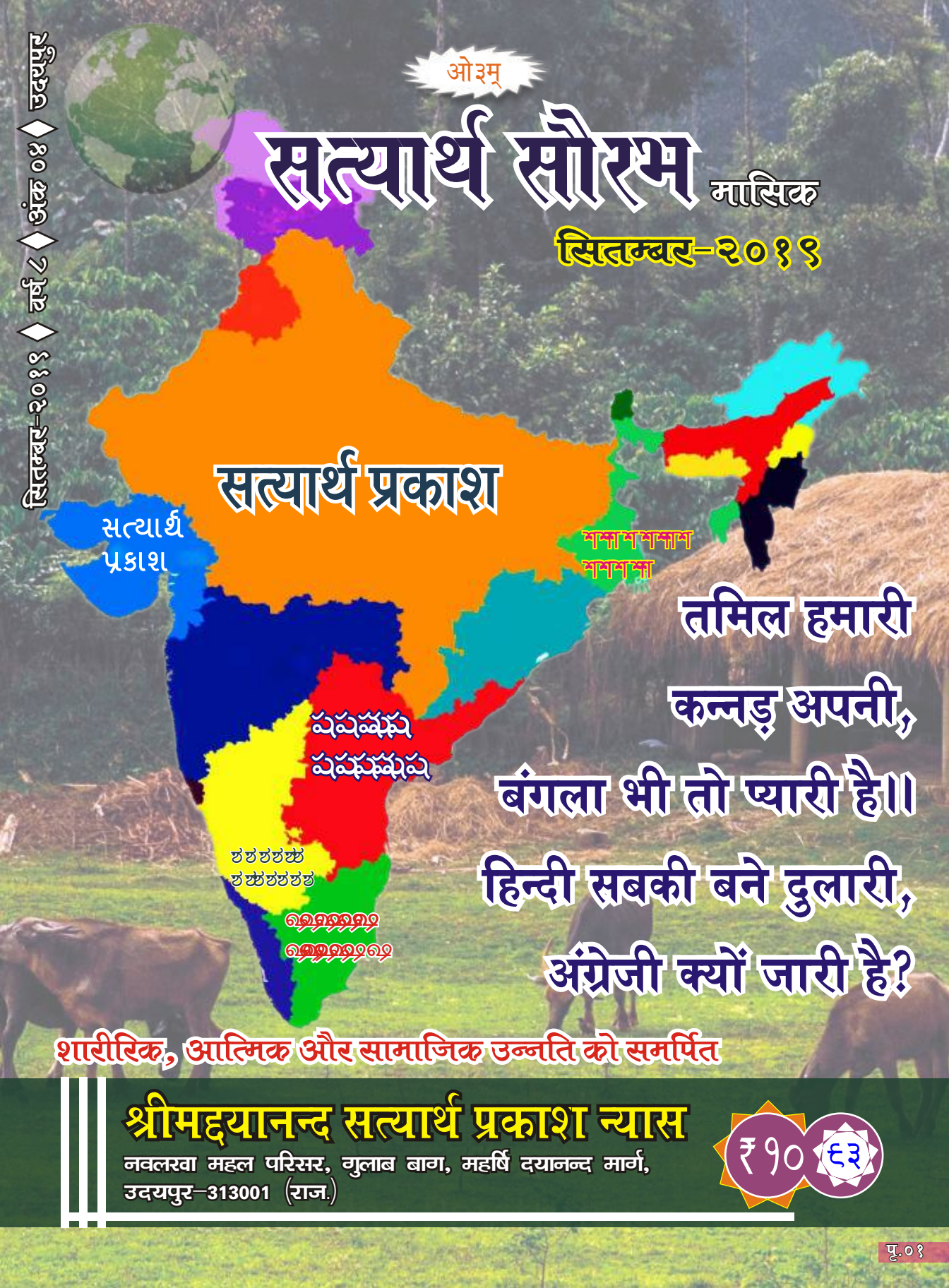




**तमिल हमारी
कन्नड़ अपनी,
बंगला भी तो प्यारी है।।
हिन्दी सबकी बने दुलारी,
अंग्रेजी क्यों जारी है?**

शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति को समर्पित

**श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास**
नवलखा महल परिसर, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग,
उदयपुर–313001 (राज.)

₹ १० ९३

शुद्धता, गुणवत्ता, उत्तमता के प्रतीक

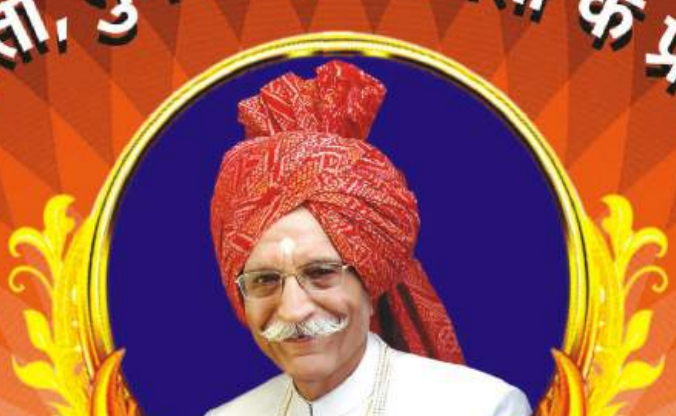

MDH

मसाले

सेहत के रखवाले

असली मसाले सच-सच

महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लिमिटेड

9/44, कीर्ति नगर, नई दिल्ली - 110015 फोन नं० 011-41425106 - 07 - 08

E-mail : mdhcare@mdhspices.in, delhi@mdhspices.in www.mdhspices.com

ESTD.1919

सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं को अपने आँचल में समेटे, सम्पूर्ण परिवार के लिए, हर आयु समूह के लिए, पठनीय और समर्पित

न्यास का मासिक मुखपत्र

# सत्यार्थ सौरभ

**प्रमुख संरक्षक - सत्यार्थ सौरभ**
महाशय धर्मपाल जी (एम.डी.एच.)
डॉ. सुखदेव चन्द सोनी (अमेरिका)

**परामर्शदाता संपादक मण्डल**
डॉ. महावीर मीमांसक
आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय
डॉ. ज्वलंत कुमार शास्त्री
डॉ.सोमदेव शास्त्री
डॉ. रघुवीर वेदालंकार
आचार्य वेदप्रिय शास्त्री

**सम्पादक**
अशोक आर्य

**प्रबन्ध सम्पादक**
भवानी दास आर्य

**प्रबन्ध सहयोग**
नवनीत आर्य (मो.9314535379)

**व्यवस्थापक**
सुरेश पाटोदी (मो.9829063110)


| सहयोग ◆ | भारत | विदेश |
|---|---|---|
| संरक्षक | - 11000 रु. | $ 1000 |
| आजीवन | -1000 रु. | $ 250 |
| पंचवर्षीय | - 400 रु. | $ 100 |
| वार्षिक | - 100 रु. | $ 25 |
| एक प्रति | - 10 रु. | $ 5 |

भुगतान राशि धनादेश/चैक/ड्राफ्ट श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें। अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया मेन ब्रांच टाऊन हॉल, उदयपुर
खाता संख्या : 310102010041518
IFSC CODE- UBIN 0531014
MICR CODE- 313026001
में जमा करा अवश्य सूचित करें।

सृष्टि संवत्
१९६०८५३१२०
भाद्रपद शुक्ल नवमी
विक्रम संवत्
२०७६
दयानन्दाब्द
१९५

**September - 2019**


सत्यार्थ-सौरभ में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र उदयपुर ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।



विज्ञापन शुल्क (प्रति अंक)
कवर 2 व 3 (भीतरी आवरण) रंगीन
3500 रु.
अन्दर पृष्ठ (श्वेत-श्याम)

| | |
|---|---|
| पूरा पृष्ठ (श्वेत-श्याम) | 2000 रु. |
| आधा पृष्ठ (श्वेत-श्याम) | 1000 रु. |
| चौथाई पृष्ठ (श्वेत-श्याम) | 750 रु. |


०६




११





समाचार २८
हलचल २९
०४ वेद सुधा
१४ फलित ज्योतिष एवं वेदज्ञान
१७ हिन्दी की उपेक्षा
१९ 'डल' का दर्पण फिर चमकेगा
२० मांसभक्षण एवं वेदमंत्र भाग-३
२१ वेदों में वर्णित सच्चे शिव की स्थिति
२३ सत्यार्थप्रकाश पहेली- ०९/१९
२४ वेदभाष्य का अधिकार किसको?
२६ स्वास्थ्य- त्रिफला
२७ कथा सरित- सादगी से उन्नति
३० सत्यार्थ पीयूष- ईश्वर का स्वरूप



**स्वामी** श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर | **वर्ष - ८** | **अंक - ०४** | द्वारा - चौधरी ऑफसेट, (प्रा.लि.) ११-१२, गुरु रामदास कॉलोनी, उदयपुर **मुद्रण**

**प्रकाशक**
श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास
नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर (राजस्थान) 313001
(0294) 2417694, 09314535379, 09829063110
www.satyarthprakashnyas.org, E-mail : satyarthsandesh@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित तथा कार्यालय श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य

ओ३म्

# वेद सुधा

## कृणवन्तो सहृदयम

**सहृदयं सांमनस्यमविद्वेषं कृणोमि वः।**
**अन्यो अन्यमभि हर्यत वत्सं जातमिवाघ्न्या।।** - अथर्व. ३/३०/१

यहाँ मन्त्र में वेदमाता प्रेम, सामनस्य और अविद्वेष के दिव्य सन्देश द्वारा हमें सचेत कर रही है। 'सहृदय का अर्थ है हृदय से हार्दिक प्रेम और आत्मीयता के साथ सभी से व्यवहार करना।' (अर्थात् दयालुता और पूर्ण सहयोग के साथ दूसरे के सुख-दुःख को अपने हृदय से अनुभव करना।)

**प्रश्न**- हृदय से महान् कौन? भौतिक दृष्टि से हम बहुत शीघ्र महान् हो जाते हैं, पर आध्यात्मिक दृष्टि से 'महानता' की पहचान हृदय के गुणों से ही विदित होती है।

'विदेह' के शब्दों में 'सत्यनिष्ठा, करुणा, दया, सेवावृत्ति, निर्भयता, श्रद्धा-विश्वास, दानशीलता और ईश्वरभक्ति के भावों से व्यक्ति सहृदय से महान् बनता है।'

सहृदय की प्रथम कसौटी है 'सत्य' का मार्ग। हृदय का स्वाभाविक गुण 'प्रेम' ही है। सत्य मार्ग पर विचरते हुए ही हृदय में 'प्रेम' का प्रवेश निश्चय से होता है, और हृदय में 'प्रेम' का प्रवेश होते ही- करुणा और दया के बीज अंकुरित होने लगते हैं।

**'सत्याऽसत्य' को जानने की कसौटियाँ-**

६ १. जो-जो ईश्वर के गुण-कर्म-स्वभाव और वेदों से अनुकूल हो, वह-वह सब सत्य (सत्यार्थ प्रकाश तृतीय समुल्लास)

२. **सत्यसनातन ईश्वरोक्त ज्ञान** (आर्योद्देश्यरत्नमाला एवं ऋग्वेद संहिता)- जो 'ज्ञान' परमात्मा ने सृष्टि के आदि में चार वेदों द्वारा चार ऋषियों के अन्तःकरण में दिया जिसमें पारिवारिक, सामाजिक और राष्ट्रीय सभी प्रकार के भाव निहित हैं। जैसे स्वाध्याय, सत्संग।

६ ३.**आत्मशुद्धि**- आत्मा की पवित्रता (सत्यार्थ प्रकाश तृतीय समुल्लास) यह सर्वविदित है कि 'बुद्धि और विचार' की शक्ति प्राणी जगत् में केवल मनुष्य योनि में ही है।

**प्रश्न**- बुद्धि की पवित्रता कैसे हो?

**उत्तर**- जब मन/हृदय से विचार और कर्म शुद्ध हों और केवल सुविचारों एवं शुभ कर्मों के सम्पादन से ही भावनाएँ 'शुद्ध एवं पवित्र' होती हैं। भावनाओं की शुद्धि से हृदय, मन, चित्त तथा सत्व की शुद्धि; और अन्तःकरण स्वतः शुद्ध होता है। अन्तःकरण (विचार) की शुद्धि से समस्त इन्द्रियों के व्यवहार भी स्वतः शुद्ध होते जाते हैं। 'विदेह' के एक उदाहरण से यह विषय और स्पष्ट हो जाता है- एक कटोरे में पवित्र जल लें। उस जल में स्वयं का अवलोकन, सूर्य और चन्द्रमा के दर्शन हो सकते हैं। यदि कटोरे में थोड़ी मिट्टी घोल/मिला दें। अब स्वयं के, सूर्य के और चन्द्रमा के रूप के दर्शन असंभव हैं। ठीक इसी प्रकार 'विचारों' से ही बुद्धि की निर्मलता और पवित्रता सिद्ध होती है।

४. **आप्तोदेश**- (आर्योद्देश्यरत्नमाला) अर्थात् प्रमाणित विद्वान्- उपदेशक के उपदेश/लेखन आदि पर आचरण कर, विश्वास करना।

५. **सृष्टिक्रम**- जो-जो सृष्टिक्रम के अनुकूल हो वह-वह सत्य अन्यथा असत्य। जैसे बिना माता-पिता के योग से सन्तान। (सत्यार्थ प्रकाश तृतीय समुल्लास)

६. **अष्ट प्रमाण**- प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द, ऐतिह्य, अर्थापत्ति, संभव और अभाव से सत्य का यथावत् ज्ञान इस भूमि पर मनुष्य कर सकता है। (आर्योद्देश्यरत्नमाला)

६ **प्रेम**- अर्थात् हृदय सहित हार्दिक प्रेम के साथ व्यवहार करना। हृदय का स्वाभाविक कार्य प्रेम ही है, घृणा नहीं। सो पहले स्वयं को हृदय से प्यार कीजिए, फिर परिवार से प्यार, समाज से प्यार और राष्ट्र से प्यार कीजिए। सम्पूर्ण मानवों से प्यार कीजिए, उनकी सुसेवा कीजिए, उसका सुधार कीजिए। इस 'प्रेम' से ही मन में भाव उत्पन्न होंगे- निश्चित होंगे। क्या किसी को दुःखी देखने पर हमारी आँखें हृदय से नम हुईं? यदि हुईं तो यही है सहृदयता की भावना। [अर्थात् दूसरों के दुःखों को हरने वाले बनो।]

'विदेह' के शब्दों में 'प्रथम प्यार करो, फिर सेवा करो, फिर प्रेरणा और उपदेश करो।' गौ जैसे अपने नवजात शिशु (वत्स) को सघनता के साथ प्यार करती है और अपने वात्सल्य से जीभ से चाट-चाट कर उसे अपनी ओर खींचती है इसी प्रकार सब ओर से हृदय से प्यार से एक दूसरे को अपनी ओर खींचो। केवल दूसरे को आत्मवत् प्यार ही नहीं करना वरन् कहें विदेह 'अपने शत्रु को भी आत्मवत् प्यार करो।' क्योंकि 'प्रेम' से ही शत्रुता का हनन होता है और शत्रु मित्र बन जाता है। शत्रु का मित्र बनना ही शत्रु का वास्तविक हनन है।

6 **सांमनस्यम्**- एक मानवता- एक मन से समता से। हे साधकों/मनुष्यों! तुम परस्पर एक दूसरे से 'मन की समता' के साथ व्यवहार करो। सभी को समभाव से देखो। अपने हृदय को समभाव से इतना महान् बनाएँ कि उसमें न केवल आपका अपना आपा अपितु सारी सृष्टि समा जाए। ऐसे विशाल हृदय में ही अनन्त और असीम ब्रह्म का वास होता है। जहाँ प्रेम होता है वहीं सांमनस्य ठहर पाता है। एक दूसरे के साथ मिलकर पूर्ण सहयोग की भावना के साथ जुड़ जाओ, एक दूसरे के साथ अपने मन को मिलाए रखो। एक दूसरे के मन को आघात मत पहुँचाओ। **'संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।'** सब मिलकर चलो और आगे का रास्ता स्वयं मिल जाएगा। 'समता' में मिलकर चलने की भावना निहित है।

6 **अविद्वेषम्**- (परस्पर वैर का त्याग) आज इस भौतिक और विज्ञान के युग में प्रेम 'वासना' और 'मोह' का रूप धारण किए हुए है और तत्काल समय में फलीभूत भी हो रहे हैं। ऐसे वातावरण में 'ईर्ष्या और विद्वेष' अधिक बढ़ता है। सहृदय बनो और 'मन' से सभी द्वेषों को निकाल दो। जहाँ सहृदयता और प्रेम होगा वहाँ 'द्वेष' का क्या काम। सुख और दुःख दोनों का बहुत गहरा सम्बन्ध है। सुख के साथ दुःख निश्चित है न्यून व अधिक, यह हमारी सोच और सहनशीलता पर निर्भर करता है। जब मन से 'मैं', 'मेरा' हट जाएगा तो 'द्वेष' भी स्वतः हटता जाएगा। जीवन में विपरीत परिस्थितियों में भी विचलित नहीं होना है। जो भी घटता है उसे घटित होने दो। निश्चित ही कुछ ही दिनों में दुःख स्वतः घटता चला जाएगा सो परस्पर 'मन' से सभी द्वेषों को निकाल दो। बदले की भावना भी 'मन' से हटा दो। इससे हृदय पवित्र और कल्याणकारी होगा और 'स्वभाव की विशालता से हृदय में 'प्रेम' के बीज दृढ़ होंगे।'

6 **प्रीति और स्नेह**- (अन्यः अन्यम् अभिहर्यतः) विद्वेष भावना त्याग कर एक दूसरे को सब ओर से प्रीति से चाहो। जैसे एक साधक/उपासक सच्चे मन से प्रभु का 'ध्यान एवं चिन्तन' श्रद्धा एवं प्रीतिपूर्वक करता है वैसे ही हमें भी अपने मनों में सभी के प्रति 'प्रीति और स्नेह' का भाव रखना चाहिए। 'प्रीति' से ही जग जीत सकते हैं। यदि घृणा है भी तो अमुक के कर्मों से है जो वह करता है। और मरने के बाद वैर/द्वेष स्वतः समाप्त हो जाता है। जैसे रावण को अहंकार की प्रबल भावना ने ही पराजित किया और मारे जाने पर श्री राम ने उसका अन्तिम संस्कार श्रद्धापूर्वक वैदिक रीति से किया। और लक्ष्मण को उपदेश भी दिया कि हे लक्ष्मण! उसका यह अहंकार तो उसके मरने पर ही समाप्त हो गया पर 'आत्मा' तो पवित्र है।

'विदेह' के शब्दों में- प्रेम ही सेवा और सुख का प्रेरक है। जहाँ प्रेम वहाँ सेवा। जहाँ सेवा वहाँ सुख। जहाँ सुख वहाँ संतोष और जहाँ संतोष वहाँ सुप्रसन्नता।

इसलिए कहा गया है कि 'प्रेम और परमात्मा' से अधिक पवित्र और मंगलप्रद और कुछ भी नहीं है। आओ सभी मिलकर सौहार्द का वातावरण बनाएँ और इस 'भू' पर स्वर्ग का आनन्द लें। ओं भूः, ओं भुवः, ओं स्वः, ओं महः, ओं जनः, ओं तपः, ओं सत्यम्।। जब बुद्धि में निर्मल भाव उत्पन्न होते हैं तो 'मन' को जिधर कहा जाए उसी ओर चल देता है। पुराणों में ये सातों ही 'स्वर्ग' के द्वार हैं। ओं सत्यम्, इस सत्य नामक स्वर्ग में इन्द्र का वास है। हमारे शरीर पिण्ड में भी नाभि आदि सात स्थान हैं और इस सत्य आज्ञा चक्र में ही 'जीव' का निवास है। इन सातों से ही हम वास्तविक 'स्वर्ग सुख' का आनन्द प्राप्त कर सकते हैं।

- जीवनलाल आर्य
मंत्री, आर्य समाज,
अशोक विहार, दिल्ली- ११००५२

आत्म निवेदन

# अर्धसत्य

भारतीय मनीषा ने सत्यभाषण को मनुष्य का सर्वोपरि गुण माना है। इसीलिए मुण्डकोपनिषद् में कहा गया 'सत्यमेव जयते नानृतम्, सत्येन पन्था विततो देवयानः (३/१/६), विजय सदैव सत्य की होती है, असत्य की नहीं क्योंकि विद्वानों का मार्ग सत्य से विस्तृत है।

यह विल्कुल सही है कि- 'सत्येन रक्ष्यते धर्मः' अर्थात् सत्य से ही धर्म की रक्षा होती है। धर्म के दश लक्षणों में 'सत्य' को परिगणित किया गया है। महर्षि मनु ने तो यहाँ तक कह दिया- 'न हि सत्यात्परो धर्मः नानृत पातकं परम्' सत्य से बढ़कर कोई धर्म नहीं और झूठ से बढ़कर कोई पाप नहीं। अतः इसमें सन्देह नहीं कि सदैव सत्य की साधना करनी चाहिए। यह अवश्य है कि अपवादस्वरूप धर्म की रक्षा के लिए ही कभी-कभी महापुरुषों द्वारा भी अर्धसत्य का प्रयोग किया गया है।

महाभारत का अत्यधिक प्रसिद्ध प्रसंग है- जब कौरव सेनापति आचार्य द्रोण किसी प्रकार काबू में नहीं आ रहे थे और अर्जुन भी गुरु-मोह में अधिक प्रहारक नहीं हो रहा था तब द्रोण-वध के लिए श्रीकृष्ण के परामर्श पर एक योजना तैयार की गयी। द्रोण का पुत्र-मोह सर्वज्ञात था। यह तय था कि अगर अश्वत्थामा मारा जाय तो द्रोण का निश्चेष्ट होना तय है और ऐसी अवस्था में उनका वध अधिक कठिन नहीं होगा। पाण्डव सेना के सम्पूर्ण विनाश को रोकना है तो द्रोण को रास्ते से हटाना आवश्यक था। सत्य और असत्य के ग्रहण में लक्ष्य-प्राप्ति को प्रबल समझा गया। वैसे भी किशोर अभिमन्यु के साथ द्रोण के सेनापति रहते जो किया गया उसने द्रोण को धर्म के दायरे से बाहर खड़ा कर ही दिया था, पर लाख प्रयत्न करने पर भी उस दिन अश्वत्थामा को धरा नहीं जा सका और सूर्य अस्ताचल की ओर अपनी निश्चित गति से चल पड़ा था। और यदि द्रोण को रोका न गया तो पांडव-मेदिनी का सम्पूर्ण संहार तय सा दिख रहा था। यह एक धर्मयुद्ध था। सामने वाले पक्ष ने अधर्म को ही अपना अस्त्र बना रखा था। द्रोण-वध के बिना धर्मराज्य की संस्थापना धूमिल ही प्रतीत हो रही थी। सोचा गया कि अश्वत्थामा की मृत्यु का असत्य समाचार फैला दिया जाय। पर क्या द्रोण उस पर विश्वास कर लेंगे? क्योंकि अश्वत्थामा कोई साधारण वीर तो था नहीं कि आसानी से मृत्यु को प्राप्त हो जाय अतः द्रोण अश्वत्थामा की वीरगति के असत्य समाचार को सत्य तभी मान सकते थे जब यह घोषणा स्वयं धर्मराज युधिष्ठिर करें। पर युधिष्ठिर इसके लिए तैयार नहीं थे। अतः सत्य से मिलता-जुलता असत्य गढा गया। भीम ने अश्वत्थामा नाम के हाथी को मार दिया और जोर से घोषणा की गयी कि 'अश्वत्थामा हतः नरो वा कुंजरः। नरो वा कुंजरः' बोलते समय जोर जोर से शंखादि की ध्वनि की गयी ताकि कुछ भी स्पष्ट न हो सके और भ्रम भरे वातावरण में द्रोण वही सत्य समझें जो पांडव समझाना चाहते थे। परिणाम अपेक्षित प्राप्त हुआ। द्रोण संज्ञाशून्य से हो गए और ऐसे में धृष्टद्युम्न के द्वारा मारे गए।

धर्मराज्य की स्थापनार्थ यह कार्य भगवान श्रीकृष्ण द्वारा प्रेरित व समर्थित था अतः इसके औचित्य पर ज्यादा प्रश्न नहीं उठाये जाते। सामने वाला पक्ष धूर्तता और अधर्म पर तुला हुआ था अतः राष्ट्र-हित के लिए यह अर्धसत्य वह भी आपात स्थिति में उचित माना गया। यह भी था यदि अर्जुन पूरे मनोयोग से अपने क्षात्र-धर्म का पालन करता तो इसकी आवश्यकता ही नहीं पड़ती।

परन्तु आज स्थिति विचित्र हो गयी है। ५००० वर्ष पुरानी आपातकालीन नीति का आज सामान्य रूप से पदे-पदे अनुसरण

किया जा रहा है। इसका आधार आज कोई धर्मराज्य की स्थापना नहीं बल्कि अनीति, बेशर्मी, सामने वाले का चरित्र हनन तथा येन-केन-प्रकारेण सत्ता-सुख प्राप्त करना रह गया है। सोशल मीडिया के दिन प्रतिदिन विस्तार तथा प्रभाव के कारण अनेक लोग यूंही भ्रम फैलाने के लिए ऐसे समाचार अथवा वीडियो प्रसारित कर रहे हैं, जिनके कारण अनेक भयावह परिणाम भी प्राप्त हुए हैं। एक महिला को डायन बताकर प्रचार किया गया तो एक व्यक्ति को बच्चों को अगवा करने वाला, भीड़ का आक्रोश इतना बढ़ा कि आरोपियों की पीट-पीट कर हत्या कर दी गयी। पर भ्रम फैलाकर आनन्द लेने वालों को इससे कोई अन्तर नहीं पड़ रहा। इस सबमें रेखांकित सत्य यह है कि इस तथ्य को आज हथियार बना लिया गया है कि एक झूठ को यदि सौ बार बोला जाय तो वह सत्य बन जाता है।

केवल राजनेता ऐसा करते हैं यह धारणा पूर्णतः सत्य से परे है। अपने स्वार्थ के लिए, स्वयं द्वारा कही बात पाठक व श्रोता को पूर्णतः सत्य लगे इस आशय द्वारा, सन्दर्भ से हटकर बात के केवल उस अंश को प्रस्तुत करना जिससे स्वयं का पक्ष प्रबल हो अथवा पाठक में भ्रान्ति का संचरण हो, अनेक वर्गों द्वारा ऐसे कार्य किये जाते हैं। पत्रकार लोग जो स्वयं को सत्यावतार के रूप में प्रस्तुत करते हैं उनके अन्दर भी यह बीमारी पैर पसार रही है। रफाल के मामले में हमने देखा कि एक प्रसिद्ध समाचार पत्र ने एक सरकारी डाक्यूमेंट के आधे हिस्से का प्रकाशन किया जो उनके पक्ष को सिद्ध करता था परन्तु नीचे जो रक्षा मंत्री की टिप्पणी थी उस भाग को छिपा लिया।

एक प्रसिद्ध पत्रकार ने एक मंत्रालय के मुखिया का बयान प्रकाशित किया। जितने भाग से उनका हित-साधन हो सकता था उन्होंने उतना ही देकर मंत्री महोदय को कटघरे में खड़ा कर दिया। मंत्री जी ने जो बयान दिया उसका आशय था कि- 'जब उन्होंने सम्बन्धित मंत्रालय का चार्ज संभाला तब उनके मंत्रालय में ४०० से ऊपर प्रोजेक्ट्स बन्द पड़े थे और कई सारे लोन (तीन लाख करोड़ से ऊपर) एन.पी.ए. हो गए थे। उसी क्रम में उन्होंने कहा कि वे मानते हैं कि इसमें सरकार की गलती थी। आगे उन्होंने जो कहा वह यह था कि यू.पी.ए. सरकार में पर्यावरण मंत्रालय ने उनको लटका रखा था। एन.डी.ए. सरकार के अन्तर्गत उन्होंने उनको क्लीयर करवाया और लगभग ३ लाख करोड़ के एन.पी.ए. को भी समाप्त किया गया। इसके लिए ११ केबिनेट प्रस्ताव पारित किये गए जिन्हें तत्कालीन प्रधानमंत्री जी व वित्त मंत्री जी ने सहयोग करते हुए संभव बनाया। उक्त सम्पूर्ण बयान का आगे का आधा भाग पत्रकार जी ने प्रकाशित कर अपनी टिप्पणी दी कि देखिये मंत्री जी ने स्वयं माना है कि उनकी सरकार का दोष है। पत्रकार जी का हित क्या था? वे शासक दल में दो फाड़ कराना चाह रहे थे या कम से कम दर्शकों को भ्रमित करना चाह रहे थे कि सतारुढ़ दल में आपस में सब कुछ ठीक नहीं है ताकि आगामी चुनावों को प्रभावित किया जा सके। अतः मंत्री जी के बयान के मूल वीडियो को वहीं कट कर दिया जहाँ वे सरकार को दोषी बता रहे थे। आगे जो यह भाग था जिससे यह स्पष्ट हो रहा था कि वे यू.पी.ए.सरकार की बात कर रहे थे न कि मोदी सरकार की, उसे सुनाया ही नहीं गया। जब सम्बन्धित मंत्रालय ने मंत्री महोदय के साक्षात्कार का पूरा वीडियो रिलीज किया तब पत्रकार महोदय का असत्य उजागर हो गया और उनके चैनल ने इस जानबूझकर किये गए घोटाले को दिल्ली और मुम्बई के बीच की दूरी के कारण हुई तकनीकी खराबी का हेतु देकर असफल सफाई दे दी। ध्यातव्य है कि ये पत्रकार २००८ में पद्मश्री से नवाजे गए हैं। इनके ऊपर 'मी टू' के अन्तर्गत यौन उत्पीड़न के आरोप भी लगे हैं। आखिर मंत्री महोदय ने स्पष्टता के साथ कड़े शब्दों में अपना पक्ष रखा।

इन्हीं पत्रकार महोदय ने एक समाचार दिया कि अब ऐसी **finger caps** बना ली गयी हैं जिनका प्रयोग करके कोई व्यक्ति अनेक बार मतदान कर सकेगा। स्पष्ट है कि ऐसा समाचार अत्यन्त चिन्ताजनक है। पर यह समाचार सरासर झूँठा है और आश्चर्य इस बात का है कि एक सम्मानित पत्रकार द्वारा बिना जाँचे ऐसी खबर को दिखाया जा रहा है। इस समाचार का इतना

भाग तो सत्य है कि अंगुली के आकार की नकली अँगुलियों का अस्तित्व तो है परन्तु यह कहना बिलकुल झूँठ है कि ये भारत में इस उद्देश्य से हैं कि फर्जी मतदान किया जा सके। फिर सच्चाई क्या है? सच्चाई यह है कि ये अंगुलियाँ जापान की एक Prosthetics maker –Yukaka Fukhshima नामक महिला द्वारा बनायी गयी ऐसी अंगुलियाँ हैं जो हूबहू असल जैसी लगती हैं।

कटे-फटे अंगों को बनाने वाली इस महिला को सबसे ज्यादा अंगुलियाँ इसलिए बनानी पड़ती हैं कि जापान के माफिया गैंग के वे सदस्य जो

अब गैंग छोड़ चुके हैं और अब नया जीवन प्रारम्भ करना चाहते हैं वे कई कारणों से, जिनमें अपना भूत छिपाना प्रमुख है, इन नयी अँगुलियों के ग्राहक हैं। उनकी अंगुली कटी क्यों इसकी भी दिलचस्प कहानी है। किसी माफिया का जब कोई सदस्य कोई विश्वासघात या गलती करता था तो प्रायश्चितस्वरूप उसे अपनी बाँये हाथ की अंगुली के ऊपर के हिस्से को काटना होता था। अब आप सोचिये कि इन अँगुलियों का सम्बन्ध भारतीय निर्वाचन प्रक्रिया को धता बताने से जोड़ना क्या उचित और नैतिक है? पर यह अर्धसत्य जो वे चाहते हैं वैसा करवाने में सक्षम हो सकता है (अर्थात् भारतीय निर्वाचन प्रक्रिया पर भ्रम और सन्देह उत्पन्न कर देना) इस कारण इस अर्धसत्य का जन्म हुआ।

अर्धसत्य का एक और उदाहरण देखिये। उड़ीसा के बालानगिरी जिले में प्रधानमंत्री मोदी जी की यात्रा के दौरान अस्थायी हेलीपेड बनाने के लिए ३००० पेड़ों को काटा गया। इस बात को मीडिया में प्रचारित भी किया गया। अनेक समाचार-पत्रों की बेवसाईट पर इसे प्रकाशित किया गया। स्वाभाविक था कि इतने अधिक पेड़ों की कटाई के समाचार से हलचल पैदा होनी ही थी। परन्तु यह भी अर्धसत्य था, अतिरंजित था। इंडिया टुडे के अनुसार अत्यन्त अल्प पेड़ों को ही इस हेलीपेड के निर्माण की प्रक्रिया में हटाया गया था। इसके समर्थन में घटना के पूर्व तथा पश्चात् के सेटेलाइट से लिए फोटोग्राफ दिए गए जिनसे यह स्पष्ट था कि इस क्षेत्र से विपुल मात्रा में पेड़ों की कटाई नहीं हुयी है। पूर्व में भी यह लगभग खाली जगह थी। यह कहना असत्य था कि वहाँ ३ हजार से भी ज्यादा पेड़ थे जिन्हें काट दिया गया। अधिकारियों के अनुसार ६ पेड़ और ४० के लगभग झाड़ियों को काटा गया था।

सौर ऊर्जा से विद्युत् उत्पादन को सरकार द्वारा बढ़ावा दिया जा रहा है यह सभी जानते हैं। समय-समय पर इस योजनान्तर्गत सब्सिडी भी दी जाती रही है। ऐसे में अगर समाचार ये आ जाये कि सरकार द्वारा सोलर पेनल मुफ्त में दिए जा रहे हैं तो इसपर विश्वास करना कठिन नहीं है। इसके अनुसार एक बेवसाईट पर जाकर पंजीयन कराना होता है। जबकि सत्य यह है कि यह समाचार बेबुनियाद है। ऐसी कोई सरकारी योजना नहीं है। फिर उद्देश्य क्या है? यह कि पंजीयन के लिए बेवसाईट पर जाने वाले लोगों के विवरण एकत्र करना।

हमें एक ऐसी पोस्ट का स्मरण हो रहा है जिसके द्वारा प्रधानमंत्री मोदी पर एक बड़ा प्रश्न चिह्न लगाया गया था। वह भी एक प्रतिष्ठित फेसबुक पेज के द्वारा। इस पोस्ट में एक ऐसे फोटो-कोलाज को दर्शाया था जिसमें ऊपर नीचे दो एक से रंग के हेलीकाप्टर थे दोनों के ऊपर AW139 लिखा था। सतही तौर पर लगता था कि दोनों हेलीकाप्टर एक ही हैं। मुख्य बात क्या थी? ऊपर के हेलीकाप्टर में से प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी उतर रहे थे तथा नीचे वाले फोटो में जो हेलीकाप्टर था उसमें कुख्यात, दुष्कर्म के आरोप में सजायाफ्ता तथाकथित धर्मगुरु विराजमान थे। इस चित्र के साथ टिप्पणी थी- 'जब देश का प्रधानमंत्री एक बलात्कारी को लेने के लिए अपना हेलीकाप्टर भेजता है बेटी बचाओ अभियान एक मजाक बनकर रह जाता है।' इस पोस्ट को ८६००० लोगों ने शेयर किया था। सीधी सी बात है हेलीकाप्टर दोनों एक ही हैं, ऐसा चित्र देखकर प्रथमदृष्ट्या लगता ही है विशेष रूप से AW139 संख्या दोनों पर देखकर। पर सच्चाई यह है कि उक्त पोस्ट का उद्देश्य भ्रम फैलाना मात्र था। वस्तुतः जब गुरमीत रामरहीम को अदालत द्वारा बलात्कार के अपराध में सजा सुनायी गयी थी तब बिगड़ती हुयी स्थिति को देखते हुए हरियाणा सरकार ने राम रहीम को हेलीकाप्टर द्वारा जेल भेजना उचित समझा था। प्राइवेट कम्पनी से हेलीकाप्टर लिया गया था। नीचे वाला चित्र उसी समय का है जब रामरहीम को हेलीकाप्टर द्वारा जेल भेजा जा रहा था। फिर इस पर AW139 क्यों लिखा है? वस्तुतः यह नंबर मोडल नम्बर है न कि रजिस्ट्रेशन नंबर। अर्थात् AW139 लिखे हुए दो ही नहीं इससे कहीं ज्यादा हेलीकाप्टर हो सकते हैं।

यही कारण है कि जब २०१४ के चुनावों में मोदी जी ने उसी कम्पनी से हेलीकाप्टर लिया था उसका मॉडल नंबर भी AW139 था, ऊपर वाला चित्र उसी समय का है। अर्धसत्य निर्माता ने अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए २०१४ तथा २०१७ के चित्र का कोलाज बनाकर मन मुताबिक खबर गढ़ ली।

विभिन्न समुदायों के बीच वैमनस्य फैलाकर अपना उल्लू सीधा करने वालों की सोशल मीडिया पर भरमार है। इनकी पोस्ट अनेक बार समाज में अवांछित स्थितियों का कारण बन चुकी हैं। उदाहरण के तौर पर एक पुरानी पोस्ट जिसमें गुजरात की एक मस्जिद से हथियारों का जखीरा बरामद होने की बात कही गयी, बार-बार कभी फेसबुक तो कभी Whatsapp पर घूमती रहती है कि देखिये जब एक मस्जिद में इतने हथियार हैं तो आखिर किसी कारण से इकट्ठे किये गए होंगे। क्यों न भारत की

सभी मस्जिदों की जाँच होनी चाहिए, आदि-आदि। आश्चर्य यह है कि कभी-कभी यह बरामदगी मन्दिर से भी बतायी गयी है।

जबकि वास्तविकता यह है कि राजकोट Detection of Crime branch ने राजकोट-अहमदाबाद हाइवे पर चोटिला के निकट एक होटल पर छापा मारकर एक बड़े 'आर्म्स रैकेट' का भंडाफोड़ किया जिसमें ५ बदमाशों को गिरफ्तार किया गया, यह घटना २०१६ की है और निहित स्वार्थों के कारण तब से सोशल मीडिया में घूम रही है।

झारखण्ड में तबरेज अंसारी माब लिंचिंग का शिकार हुआ। निश्चितरूप से यह जघन्य अपराध है। हर अपराधी को सजा मिलनी ही चाहिए। परन्तु कुछ लोगों द्वारा, यह प्रकरण शान्त न हो जाय इस मकसद से इतने सारे झूँठ गढ़कर सोशल मीडिया में परोसे जा रहे हैं कि गिनना मुश्किल हो जाय। मृतक की विधवा के साथ फिल्म एक्टर आमिर खान का फोटो प्रसारित किया जा रहा है कि वे उससे मिलने गए। आमिर के टीवी सीरियल 'सत्यमेव जयते' के लांचिंग से 'कट' करके एक वीडियो बनाया गया है जिससे प्रतीत होता है कि आमिर तबरेज की हत्या के सन्दर्भ में मार्मिक दुःख प्रकट कर रहे हैं। शाहरुख खान के भी उनसे मिलने की बात प्रसारित हो रही है। वहीं सलमान खान ने उन्हें दो लाख रुपये दिए हैं यह भी बताया जा रहा है, आदि-आदि। एक फैक्ट चेक साईट Boom के अनुसार ये सब दावे असत्य हैं।

किस प्रकार पूर्णतः असत्य परोसने में इन लोगों को संकोच नहीं होता यह आश्चर्यजनक ही है। एक सज्जन ने अपनी पोस्ट में तीन युवतियों (जो कि बिकनी पहने थीं) का फोटो शेयर करते हुए लिखा कि 'जो संबित पात्रा बुर्के का विरोध टीवी चैनलों पर करते हैं उनकी बेटी को देखें।' वास्तव में यह फोटो आमिर खान की भतीजी का था। (वह चित्र हम यहाँ नहीं दे रहे)

इस प्रकार अर्धसत्यों की एक अनन्त शृंखला हमें दिखायी देती है। कितना लिखें।

अभी हाल में सम्पन्न विश्वकप क्रिकेट के दौरान एक फोटो शेयर किया जा रहा था जिसमें कांग्रेस के वरिष्ठ नेता शशि थरूर कुछ महिलाओं के साथ खड़े दिखायी दे रहे हैं। दावा यह किया गया कि ये पाकिस्तानी क्रिकेट खिलाड़ियों की पत्नियाँ हैं अतः पकिस्तान को तो हारना ही था। जबकि सत्य यह है कि यह फोटो इन्दौर में हुए एक समारोह के बाद का है जो कि विश्वकप से पूर्व फरवरी २०१८ में सम्पन्न हुआ और इसे तब स्वयं शशि थरूर ने पोस्ट किया था।

गत दिनों एक फोटो सोशल मीडिया में छाया हुआ है जिसमें प्रसिद्ध नेता सुब्रमण्यम स्वामी को कुछ मुस्लिम महिलाओं के साथ दिखाया गया है। दावा किया जा रहा है कि उन महिलाओं में स्वामी की बेटी तथा नवासी हैं जिन्हें हज यात्रा पर भेजने के लिए स्वामी एयरपोर्ट आये हैं। वास्तविकता यह है कि स्वामी की एक बेटी ने मुस्लिम से विवाह किया है पर इन महिलाओं में वे नहीं हैं। इस फोटो पर लगी टिप्पणी बहुत कुछ स्पष्ट कर देती है। टिप्पणी इस प्रकार है- 'हिन्दुओं को मुसलमानों के खिलाफ भड़काने वाले कट्टर हिन्दू नेता सुब्रमण्यम स्वामी हैदराबाद एअरपोर्ट पर अपनी सगी बेटी और नवासी को हज पर रवाना करते हुए। लेकिन इससे आपको क्या आप तो अपना हिन्दू मुस्लिम जारी रखो।'

ऐसा फोटो है अवश्य। परन्तु इन महिलाओं में से कोई भी न तो स्वामी की बेटी है न नवासी। वस्तुस्थिति यह है कि यह बेंगलूरू एयरपोर्ट पर स्वामी के प्रशंसकों के आग्रह पर उनके साथ खिचवाया फोटो है।

आर्य समाज के शीर्ष नेता और भामाशाह पद्मभूषण महाशय धर्मपाल जी के निधन की झूँठी खबर उड़ाकर कुछ समय के लिए समस्त आर्यों को किस प्रकार दुःख सागर में डुबोने का पाप किसी ने किया था यह तो सभी को ज्ञात है।

केवल राजनीति के क्षेत्र में यह अर्धसत्य अपने कदम जमा चुका है ऐसी बात नहीं। गत दिनों में सोशल मीडिया पर एक वीडियो

बहुप्रचारित था कि थाईलैंड में एक फब्बारा ऐसा है कि जैसे ही ओम् का उच्चारण किया जाता है वह चलता है और काफी ऊँचाई तक उसका पानी जाता है। ओम् नाम की महिमा से प्रसन्न होना स्वाभाविक है परन्तु यह सत्य है क्या? प्रश्न यह है। सच्चाई यह है यह फब्बारा थाईलैंड में न होकर उत्तरी चीन में है। यह प्राकृतिक भी नहीं है। आज सर्वत्र हम म्यूजीकल फाउन्टेन देखते हैं। अपने नवलखा महल में स्थापित म्यूजीकल फाउन्टेन संगीत से संचालित होता है। ओम् की ध्वनि से भी चलता है। परन्तु वीडियो में इसे केवल ओम् की ध्वनि से चलाया है और इस रूप में प्रस्तुत कर दिया है कि यह प्राकृतिक फब्बारा है और ओम् की ध्वनि से चलता है देखिये कुदरत का कमाल और 'ओ३म्' की महिमा। लाखों करोड़ों दर्शकों तक इसने अपनी पहुँच बनायी है। एक बेवसाईट के अनुसार सत्य यह है कि इस फब्बारे को हिमालय म्यूजिक कम्पनी द्वारा बनाया गया है और यह किसी भी आवाज से यहाँ तक कि चीखने से भी चलता है ।

एक फोटो जिसमें एक बाइबिल दिखायी है उस पर बहुत सारी crystallization जैसी स्थिति दिखायी देती है। इस फोटो को शेयर करने वाले का दावा है कि यह बाइबिल समुद्र के अन्दर पायी गयी है और अत्यधिक लम्बे समय तक समुद्र के नमकीन पानी में पड़े रहने के कारण crystallization दिखायी पड़ता है। सच्चाई यह पायी गयी कि न तो यह बायबिल थी और न यह समुद्र में पायी गयी। यह एक जर्मन-इंग्लिश डिक्शनरी थी और इस पर कैथरीन नामक एक चित्रकार ने प्रयोग के तौर पर नयी विधा में चित्रकारी की थी। जब ऐसी अद्भुत बाइबिल आ गयी तो बाकी क्यों पीछे रहें ऐसी ही एक कुरआन भी सामने आ गयी। आर्यसमाज भी इस अर्धसत्य की बीमारी से नहीं बचा है। एक प्रतिष्ठित पत्रिका में एक आर्य नेता के बयान के पत्र का उतना ही अंश प्रकाशित कर दिया जो प्रकाशक को अपने समर्थन में लगा जबकि पूरा पत्र प्रकाशित करते तो स्थिति ठीक उलट हो जाती।

तो हमें इतना समझ लेना चाहिए कि जब हम अपने अभीष्ट परिणाम को लाने के लिए सच को छिपाकर उक्त प्रकार के झूँठ को संप्रेषित कर रहे होते हैं तो वेदाज्ञा का सीधे-सीधे उल्लंघन कर पाप को प्रश्रय दे रहे होते हैं। इस प्रकार के कृत्यों से कभी-कभी तो अकल्पनीय दुर्घटनाएँ घट जाती हैं।

Thousands of people are liking, sharing and commenting on these posts, believing them to be true. This vicious circle of blaming and counter-blaming is leading to further polarization in our society. The barrage of fake news is such that even the most rational among us inadvertently get swayed by these emotionally-charged lies.

ऐसी स्थिति केवल भारत में नहीं विश्वभर में है। इनको हम और आप रोक सकते हैं। ऐसी किसी भी पोस्ट को जो किसी का अहित कर सकती है, सामाजिक सौहार्द को बिगाड़ने वाली है हम शेयर न करें, तो शायद गम्भीर दुष्परिणामों में कमी आ सकती है।

- अशोक आर्य
चलभाष- ०९३१४२३५१०१, ०८००५८०८४८५

**श्री रूपकिशोर शास्त्री बने गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के उपकुलपति**

आदरणीय श्री रूपकिशोर जी शास्त्री को, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के उपकुलपति पद का कार्यभार सम्भालने पर हार्दिक बधाई व शुभकामनाएँ। विश्वास है कि उनके नेतृत्व में यह ऐतिहासिक संस्थान पुरानी ख्याति को संस्पर्श करेगा।
न्यास व सत्यार्थ सौरभ परिवार की ओर से शास्त्री जी को एक बार पुनः शतशः बधाई।

# धरती पर विनाश का ताण्डव रोकने हेतु वृक्षारोपण जरूरी

हे धरती वासियों! यदि हम सब यह चाहते हैं कि हमारी यह धरती, इस पर निवास करने वाला प्राणी जगत् सुरक्षित रहे, तो हमें पेड़-पौधों की रक्षा और उनके नवरोपण, सुरक्षादि की ओर विशेष-विशेष ध्यान देना होगा। यदि हम चाहते हैं कि यह धरती हरी-भरी रहे, नदियाँ अमृत जल बहाती रहें और मानवता की सुरक्षा होती रहे तो हमें पेड़-पौधे उगाने, लगाने, संवर्द्धित करने और संरक्षित करने का एक अभियान चलाना चाहिये तथा चलाना होगा। प्रकृति की शोभा वृक्षों से है। वृक्षों से इस धरा का जो रूप निखरता है वह मानव को प्रेरित करता है। कारण पेड़-पौधे प्रकृति की सुकुमार, सुन्दर और सुखदायक सन्तानें हैं, जिनके माध्यम से प्रकृति अपने अनन्य पुत्र मनुष्यों तथा अन्य सभी तरह के जीवों पर अपनी ममता के भण्डार न्यौछावर कर अनन्त उपकार युगों-युगों से करती आ रही है। स्वयं पेड़-पौधे भी अपनी प्रकृति माँ की तरह ही सभी जीव-जन्तुओं पर उपकार तो किया ही करते हैं तथा उनके सभी तरह के अभावों को दूर करने के अप्रतिम साधन भी हैं। पेड़-पौधे और वनस्पतियाँ हम धरतीवासियों को फल-फूल, औषधियाँ, छाया एवं अनन्त विश्राम तो प्रदान किया ही करते हैं, वे हमारे लिये प्राण-वायु (ऑक्सीजन) के अक्षय भण्डार भी हैं। जिसके अभाव में किसी भी प्राणी का एक पल के लिये भी जीवित रह पाना सम्भव नहीं है।

यह निर्विवाद सत्य है कि वृक्षारोपण की आवश्यकता इस धरती पर आदि काल से रही है। बड़े-बड़े ऋषि-मुनियों के आश्रमों में वृक्षों की सघनता पहली आवश्यकता होती थी। महाकवि कालिदास ने 'अभिज्ञान शाकुन्तलम्' के अन्तर्गत महर्षि कण्व के शिष्यों के द्वारा वृक्षारोपण किये जाने का उल्लेख किया है। ऋषि-मुनियों की खोज वृक्षारोपण के पीछे सब प्राणियों के प्रति स्वास्थ्य की रक्षा अहम रही है।

वृक्षारोपण से हमारे जीवन प्रकृति का परस्पर संतुलन क्रम बना रहता है यह बात ऋषि-मुनियों ने जगत् को समझाया और शास्त्रों में भी वृक्षों की महिमा अंकित है। विगत ३० वर्षों से पृथ्वी पर सड़कों का, भवनों का निर्माण जिस गति से हुआ है जिसके चलते वृक्षों की अन्धाधुन्ध कटाई हुई है, जिसके फलस्वरूप धरती का पर्यावरण व मानव जीवन भी प्रभावित हुआ है। जितने वृक्ष काटे गये उनकी जगह १० प्रतिशत वृक्ष भी नहीं लगाए गए। नर्मदा किनारे मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री द्वारा 'नर्मदा बचाओ, धरती सजाओ' योजना के अन्तर्गत छः करोड़ वृक्ष लगाने का संकल्प सम्पादित हुआ। मध्य प्रदेश सरकार की इस योजना को पूरा करने हेतु मुख्यमंत्री तो कृतसंकल्प रहे पर यथार्थ में यह योजना पूर्णता प्राप्त किये बिना ही दम तोड़ गई। इसके लिये देशवासियों का वृक्षों के प्रति प्रेम का अभाव भी एक कारण रहा है।

वर्तमान में नगरों, महानगरों यहाँ तक कि कस्बों और देहातों में छोटे-बड़े उद्योग धन्धों की बाढ़ सी आ रही है। सड़कों पर दौड़ते डीजल-पेट्रोल से चलने वाले वाहनों की भरमार उनसे निकलने वाला धुआँ, तरह-तरह की विषैली

गैसें आदि निकलकर पर्यावरण में फैल जाती हैं। वृक्षों के अभाव में उन गैसों का मानव जीवन पर जो बुरा प्रभाव पड़ रहा है उनमें धरती पर यथासमय उचित वर्षा का न होना, धरती का तापमान बढ़ना, जलस्तर में कमी प्रमुख हैं। उद्योगों द्वारा बहुत ज्यादा मात्रा में वायुमण्डल में जो विषैली गैसें छोड़ी जाती हैं उनको वायुमंडल में घुलने से रोकने का एक मात्र माध्यम है वह है धरती पर खड़े पेड़-पौधे। ये ही वायुमण्डल और वातावरण में जहरीली गैसों के दुष्परिणामों से रक्षा कर पर्यावरण को प्रदूषित होने से बचाते हैं। राख और रेत आदि के कणों को भी ऊपर जाने से रोकते हैं। इस सारी बातों से अनजान बन, आज का स्वार्थी मानव चन्द रुपयों की खातिर पेड़-पौधों की अन्धाधुन्ध कटाई करता जा रहा है। एक तरफ वास्तु शास्त्र के भ्रामक प्रचार से अज्ञात भय के कारण भी कई पेड़ धाराशायी हो गये हैं, जो हमारे लिये चिन्ता और चिन्तन का विषय है। यही हाल रहा तो ओजोन परत के प्रदूषित होकर फट जाने का खतरा भी बढ़ता जा रहा है। ओजोन गैस मानव जीवन के लिए बहुत जरूरी है। जो ब्रह्म मुहूर्त यानि प्रातः ४ बजे धरती से करीब तीन चार फीट की ऊँचाई पर आकर मानव जीवों को सुखी बनाने, स्वस्थ रखने का वरदान देती है। इसलिए तो सूर्योदय से दो तीन घंटे पूर्व जागने की परम्परा हमारे यहाँ प्रचलित थी। जैसे-जैसे सूर्योदय होता है ओजोन परत धरती से ऊपर उठती जाती है, इस हेतु धरती की समग्र रक्षा के लिये ओजोन परत का बना रहना बहुत जरूरी है। अन्यथा धरती पर सूर्य की किरणें अग्नि वर्षा करने लगेंगी तब धरती वासियों का क्या होगा? इसलिये पेड़-पौधों का वर्तमान समय में अधिकाधिक रोपण व उनको संवर्द्धित तथा संरक्षित करने की महती आवश्यकता है। इस वर्षाकाल में वन महोत्सव के रूप में सघन वृक्षारोपण अभियान की जरूरत है। हर व्यक्ति १ पौधा रोपित करे व उसे पाल पोस कर बड़ा करने की जिम्मेदारी उठावे।

उन सभी धनपतियों से निवेदन है कि खर्चीली शादियाँ जो करोड़ों को पार कर जाती हैं उन्हें चाहिये कि वे शादी में वृक्षारोपण सम्बन्धी मुहिम की व्यवस्था करें। लाखों रुपये टेन्ट, लाईट-विद्युत सज्जा पर खर्च कर देते हैं। उनमें कटौती कर वृक्षारोपण अभियान को विवाह में सम्मिलित हुए अतिथि मेहमानों से निवेदन कर इसे गति प्रदान करें।

छायादार-फलदार पेड़-पौधों को भेंट कर, उन्हें सुरक्षा कवच हेतु नगद धन राशि देकर चिरञ्जीव पुत्र, सौभाग्यवती पुत्री की स्मृति में नई पहल कर धरती पर हरित क्रान्ति का

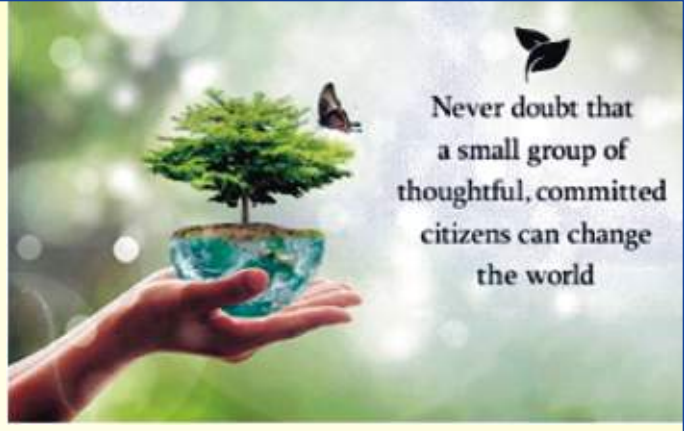


शंखनाद कर आने वाले समय में धरती पर विनाश के तांडव को रोकने हेतु हर सार्थक प्रयास कर वृक्षारोपण जरूरी हो गया है। यह निवेदन करते हुए जितने अतिथि मेहमान आएँ उन्हें पौधा भेंट करें। जनसंख्या वृद्धि के इस दौर में अन्त्येष्टि संस्कार हेतु जितनी लकड़ी का उपयोग होता है उस अनुपात में वृक्षारोपण समय की माँग के साथ अनिवार्य हो गया है।

धरती पर जितने अधिक पेड़-पौधे या वन होंगे उससे हमें उसी अनुपात में पर्यावरण सुरक्षा का लाभ तो मिलेगा ही साथ ही साथ जड़ी बूटियाँ, जंगली पशु पक्षियों का सुदर्शन, पेड़-पौधों के पत्ते से घास फूस हरियाली और उनकी छाया में पनपने वाली वनस्पतियों को मुफ्त खाद, इमारती व फर्नीचर हेतु लकड़ियाँ, कागज आदि बनाने हेतु कच्ची सामग्री भी सहज उपलब्ध हो सकेगी। पेड़-पौधों की पत्तियाँ और उनकी शाखाएँ सूर्य किरणों के लिए धरती के भीतर से आर्द्रता जलकण पोषण करने के लिए पान-नलिका का काम करते हैं। सूर्य किरणें भी नदियों और सागर से जलकणों का शोषण कर वर्षा का कारण बना करती हैं। वहीं उनसे अधिक यह कार्य पेड़-पौधे किया करते हैं। इस दृष्टि से पर्यावरण की सुरक्षा, हरियाली और वर्षा की सुरक्षा हेतु हमें पेड़-पौधों की कितनी जरूरत है यह आप सोचें व वृक्षारोपण करें।

वृक्षारोपण हेतु जगह-जगह सुन्दर-सुन्दर नारे भी अंकित हों, जिन्हें पढ़कर, प्रेरणा पाकर वृक्षारोपण के कार्य में सहयोग मिले। जैसे-

**वृक्ष धरा के भूषण हैं, करते दूर प्रदूषण हैं,**
**बंजर धरती करे पुकार, बच्चे कम हों वृक्ष हजार।**
**संतति सो वृक्ष-को मानो, पालो खूब-खूब बढ़ाओ,**
**हो वृक्षारोपण से अनुराग, दो इन्द्रियानन्द को त्याग।**
**धरती पर सजे वृक्ष संसार,**
**तभी मिलेगा अमृत्व का उपहार।।**

पर्यावरण शुद्ध करने हेतु दस-दस वृक्ष लगाओ। यह कार्य पंचायतें, नगर पालिका, नगर निगम, सामाजिक धार्मिक संस्थाएँ व राम तथा भागवत कथावाचक भी इस हेतु सार्थक

प्रयास करेंगे तो निश्चित पुनः धरती पर वनमहोत्सव मनने लगेगा। अपने प्रियजनों की स्मृति में, जन्मदिवस, वैवाहिक वर्षगाँठ पर भी वृक्षारोपण का कार्य करने का मन बनावें व उसे मूर्त रूप दें। वृक्षारोपण केवल फोटो खिंचवाने तक ही सीमित न रह जावे। वर्तमान में प्रदर्शन सर चढ़ कर बोल रहा है। हमें ऐसा ना करते हुए रोपित पेड़-पौधों को बड़ा करना है। यह लक्ष्य बना औरों को प्रेरित करें।

मैने स्वयं १५० से अधिक पौधे रोपे थे जो आज वृक्ष बनकर छाया देने लगे हैं। फल दे रहे हैं। मैं जहाँ भी यज्ञ करने, कथा व अनुष्ठान करने, वैवाहिक कार्यक्रमों को सम्पन्न कराने जाता हूँ वहाँ वृक्षारोपण का संकल्प अवश्य दिलवाता हूँ।

अभी हमारे मित्र अग्निवेश पाण्डेय ने अपनी निजी भूमि पर १०० वृक्ष लगा, बड़ा करने का संकल्प लिया है। तार फेंसिंग व ट्यूबवेल का कार्य पूर्ण हो गया है। गड्ढे खोद दिये गये हैं। शीघ्र ही छायादार व फलदार सौ पौधे रोपित होंगे व उनका लालन-पालन भी होगा। एक संस्था का गठन भी 'आर्य तरु संरक्षण समिति' के नाम से किया गया है। आशा है आप भी अपने क्षेत्र में पहल कर अधिकाधिक वृक्षारोपण कर सांस्कृतिक कृत्य के रूप में अपनी सहभागिता निभायेंगे।

बुराई छोड़ने के साथ वृक्षारोपण का संकल्प लें। परमात्मा आपको इस कार्य हेतु साहस एवं शक्ति दे। अन्यों को प्रेरित करने हेतु समय के साथ गति व मति प्रदान करें। इति शुभम्।

– डॉ. पं. लक्ष्मीनारायण सत्यार्थी
चलभाष- ९९२६७३७६०५

कर्मयोगी महाशय धर्मपाल
अध्यक्ष-न्यास

सेवा-भाव भरा हो मन में,
हर पल हो संघर्ष।
तभी गले लगाती मंजिल,
होता है उत्कर्ष।।

सत्यार्थ सौरभ
घर-घर पहुँचावें।


## आर्यरत्न डॉ. ओमप्रकाश (म्याँमार) स्मृति पुरस्कार

## "सत्यार्थ-भूषण" पुरस्कार ₹ 5100

### कौन बनेगा विजेता

- न्यास की मासिक पत्रिका सत्यार्थ सौरभ का सदस्य होना आवश्यक है।
- हल की हुयी पहेली अन्तिम तिथि से पूर्व न्यास कार्यालय में पहुँचे यह सुनिश्चित करें।
- अपना सत्यार्थ सौरभ सदस्यता क्रमांक हल की हुयी पहेली के ऊपर अवश्य अंकित करें।
- लिफाफे के ऊपर 'सत्यार्थप्रकाश पहेली क्रमांक' अवश्य अंकित करें।
- आयु, लिंग, योग्यता की कोई बाधा नहीं। आबाल-वृद्ध, नर-नारी, छोटे-बड़े सभी पात्र हैं।
- विश्व भर के लोगों से सत्यार्थ सौरभ मासिक पत्रिका के अन्तर्गत 'सत्यार्थकाश पहेली' में भाग लेने का अनुरोध है।
- वर्ष भर में एक (१) के स्थान पर चार (४) पुरस्कारों के साथ ही नियमों में सकारात्मक परिवर्तन कर ऐसी व्यवस्था की गई है कि वर्ष में एक बार भाग लेने वाले/अथवा एक बार ही सफलता प्राप्त करने वाले भी पुरस्कार से वंचित न हों।
- पहेली का सही हल प्रेषित करने वाले प्रतिभागियों को ४ भागों में विभक्त किया जावेगा।
  - (अ) सम्पूर्ण वर्ष में समस्त १२ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (ब) सम्पूर्ण वर्ष में ८ से ११ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (स) सम्पूर्ण वर्ष में ५ से ७ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (द) सम्पूर्ण वर्ष में १ से ४ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
- वर्षान्त में प्रत्येक समूह में से एक विजेता का चयन (लाट्री द्वारा) किया जाकर पुरस्कृत किया जावेगा।
- पुरस्कार राशि क्रमशः ₹५१००, ₹११००, ₹७०० तथा ₹५०० होगी। अन्य सभी नियम पूर्वानुसार।

## ₹5100 का पुरस्कार प्राप्त करें "सत्यार्थ सौरभ" के सदस्य बनें

अविलम्ब बहुप्रशंसित पत्रिका 'सत्यार्थ सौरभ' के सदस्य बनें, जो पहले से सदस्य हैं अपना नवीनीकरण करावें और सत्यार्थ सौरभ में छप रही 'सत्यार्थप्रकाश पहेली' में भाग लेने की पात्रता प्राप्त करें और पावें ₹5100 का पुरस्कार।

पूर्ण विवरण इसी पृष्ठ पर देखें।

# फलित ज्योतिष वेदज्ञान के अनुकूल न होने से मान्य नहीं है

ऋषि दयानन्द सरस्वती ने आर्य हिन्दुओं के पतन के कारणों में मूर्तिपूजा एवं फलित ज्योतिष को प्रमुख कारण स्वीकार किया है। उनके अनुसार यह दोनों विचार व इन पर विश्वास अवैदिक होने से इनसे मनुष्यों को कोई लाभ नहीं होता अपितु हानि ही हानि होती है। इसका प्रमाण भारत पर मुस्लिम आक्रमणों व अंग्रेजों के राज्य में हमारे राजाओं की पराजय सहित सोमनाथ, कृष्ण जन्मभूमि, राम जन्मभूमि, काशी-विश्वनाथ मन्दिर के ध्वंस व लूट आदि को माना जा सकता है। यदि हमारे धर्म में ये विजातीय विचार व मान्यतायें न होतीं तो हमने विगत १३०० वर्षों में जो अपमान व पराजय के दुःख झेले हैं, वह कदापि न हुए होते। इस बात को यदि एक वाक्य में कहा जाये तो हमारे सभी दुःखों का कारण वेदमत का त्याग और अज्ञान व अन्धविश्वासों से युक्त अवैदिक मतों व मान्यताओं को मानना था। यदि आज भी हम सब सनातनधर्मी वैदिकधर्मी लोग पुराणों की मान्यताओं का त्याग कर, ईश्वरीय ज्ञान वेद व उसकी मान्यताओं को स्वीकार कर संगठित हो जायें, तो संसार की कोई ताकत हमें पराजित नहीं कर सकती। शायद इसीलिये ऋषि दयानन्द ने वेदों की मान्यताओं के आधार पर आर्यसमाज का चौथा नियम बनाया है जिसमें उन्होंने कहा है कि 'सत्य के ग्रहण करने और असत्य का त्याग करने में सदा उद्यत रहना चाहिये।' तीसरा नियम है कि 'वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों (हिन्दुओं सहित अन्य सभी मतावम्बियों का भी) परम धर्म है।' एक प्रमुख नियम यह भी है कि 'अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिये।' हम समझते हैं कि यदि सनातन धर्म के सभी अनुयायियों ने ऋषि दयानन्द के इन महान् सन्देशों को आत्मसात् किया होता तो आज विश्व में हमारी स्थिति कहीं अधिक सुदृढ़ होती और देश के स्वतंत्रता आन्दोलन में व उसके बाद जो गलतियाँ हमारे कुछ नेताओं से हुई हैं, वे न हुईं होतीं।

फलित ज्योतिष हमारे सौर मण्डल के ग्रहों की स्थिति व गतियों को हमारे भाग्य व सुख-दुःखों से जोड़ता है। हमारी

सफलताओं और असफलताओं को पुरुषार्थ व आलस्य का परिणाम न मानकर उसे ग्रहयोग के अनुसार मानता है।

आर्यसमाज की मान्यता है कि खगोल ज्योतिष का ज्ञान तो सत्य है परन्तु फलित ज्योतिष व उसके सिद्धान्त मिथ्या हैं। मनुष्य के भाग्य से हमारे सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र व शनि आदि ग्रहों का कोई सम्बन्ध नहीं है। आर्यसमाज की मान्यता के अनुसार यह सभी ग्रह जड़ व ज्ञानशून्य हैं। ये ग्रह किसी भी प्रकार के ज्ञान एवं सम्वेदना से रहित हैं। हमें किसी वस्तु से सुख व दुःख तभी प्राप्त हो सकता है जबकि वह चेतन पदार्थ अर्थात् मनुष्य या पशु आदि प्राणी हों। ज्ञान होने के साथ हमें सुख व दुःख पहुँचाने वाली सत्ता में विवेक एवं शक्ति भी होनी चाहिये। जड़ व निर्जीव होने के कारण किसी भी ग्रह में न कुछ ज्ञान है न हमें सुख व दुःख देने की

शक्ति। सूर्य के प्रकाश व ताप से संसार के सभी लोगों को समान रूप से लाभ व हानि होती है। विभिन्न व्यक्तियों के प्रति सूर्य का व्यवहार अलग अलग नहीं हो सकता। इसी प्रकार से शनि व अन्य ग्रहों के बारे में भी जाना व माना जा सकता है। आर्यसमाज वेदों को ईश्वरीय ज्ञान मानता है और इसे प्रमाणित भी करता है। वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तक हैं। यदि फलित ज्योतिष का ज्ञान सत्य होता तो इसका उल्लेख वेदों में अवश्य होता। वेदों में उल्लेख न होने के कारण भी फलित ज्योतिष का ज्ञान वेदों के विपरीत सिद्ध होता है। सत्य और असत्य का विचार करने पर भी फलित ज्योतिष का ज्ञान अविद्या ही सिद्ध होता है। हमने अनेक ज्योतिषियों की फलित ज्योतिष के आधार पर भविष्यवाणियों को निरर्थक व असत्य पाया है। पाकिस्तान भारत में आतंकवादी भेज कर अशान्ति उत्पन्न करने सहित निर्दोष लोगों की हत्या करता रहता है। कोई ज्योतिषी यह नहीं बताता कि आगामी आतंकी हमला किस स्थान पर कब होगा और उस हमले के शिकार हमारे सेना के कौन-कौन से अधिकारी व जवान होंगे? हमारे एक मित्र उच्च कोटि के ज्योतिषाचार्य थे। अनेक ज्योतिषी उनसे परामर्श भी लिया करते थे। एक बार उनकी पत्नी का एक दुर्घटना में हाथ टूट गया। हम उनके घर शिष्टाचार के लिये गये और पति-पत्नी से मिले। बातें करते हुए हमारे मित्र की पत्नी ने कहा कि मेरे पति नगर के अनेक लोगों का भाग्य बताते हैं परन्तु इन्होंने कभी मुझे यह नहीं बताया कि मेरी दुर्घटना हो सकती है और मेरा हाथ टूट सकता है। हमने यह भी पाया कि हमारे मित्र की पत्नी अपने पति के ज्योतिषीय कार्यों से प्रायः खिन्न रहा करती थीं और उन्हीं के

सामने हमसे उनकी शिकायत किया करती थीं। हमारे मित्र श्री चन्द्रदत्त शर्मा व उनकी धर्मपत्नी दोनों ही हमें अपने छोटे भाई की तरह स्नेह देते थे। दुर्भाग्य से आज दोनों ही इस संसार में नहीं हैं। हमने अपने मित्र की अनेक भविष्यवाणियाँ असत्य सिद्ध होते देखी हैं। इससे हमारा निश्चित मत है कि फलित ज्योतिष मनुष्य के लिए हितकारी नहीं अपितु अहितकारी है। माता-पिता अपने युवक-युवती पुत्र व पुत्रियों के लिए वर व वधू ढूँढते हैं। उन्हें गुण, कर्म व स्वभाव के अनुसार वर-वधू मिल भी जाते हैं परन्तु हमारे ज्योतिषी पण्डित अनेक मामलों में उनके ग्रहों की स्थिति आदि के कारण उनका विवाह होना हानिकारक बताकर उनका विवाह नहीं होने देते। वास्तविकता यह भी है कि जिन अनेक लोगों की जन्मपत्री मिल जाती है उनके विवाह में अनेक प्रकार की अनहोनी यथा वर की विवाह से पूर्व भीषण दुर्घटना, कुछ मामलों में किसी एक की मृत्यु व विवाह के दिन आँधी व तूफान आदि से अनेक प्रकार की बाधायें अथवा परिवार में किसी सदस्य की मृत्यु आदि जैसी बातें हो जाती हैं। अतः ज्योतिष को न मानने में ही लाभ है। विश्व में ईसाई, मुसलमान, सिख एवं वाममार्गी आदि लोग व अन्य कुछ मत-मतान्तरों के लोग फलित ज्योतिष की किसी मान्यता को नहीं मानते और ऐसे लोगों को जीवन में सुखी व सम्पन्न देखा जाता है। इससे फलित ज्योतिष एक आधारहीन मिथ्या मान्यता व अविद्या सिद्ध होती है। शिक्षित बन्धुओं को फलित ज्योतिष के जाल में नहीं फंसना चाहिये और ईश्वर तथा अपने प्रारब्ध सहित पुरुषार्थ पर विश्वास रखना चाहिये। कहा भी गया है कि प्रारब्ध से पुरुषार्थ बलवान होता है। पुरुषार्थ से प्रारब्ध को भी बदला जा सकता है। अतः विद्या अर्जित करने, वेदों के स्वाध्याय सहित पुरुषार्थ को ही महत्व देना चाहिये।

वैदिक काल में फलित ज्योतिष का अस्तित्व था, इसकी सम्भावना नहीं है। रामायण एवं महाभारत ग्रन्थों में फलित

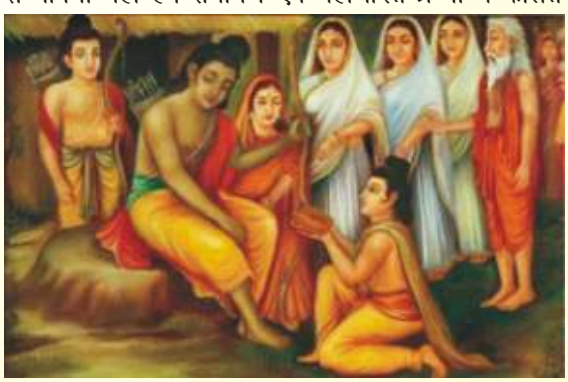

ज्योतिष विषयक कोई सन्दर्भ प्राप्त नहीं होता। रामचन्द्र जी के राज्याभिषेक का निश्चय वसिष्ठ आदि ऋषियों की सम्मति से राजा दशरथ ने किया था।

यह निश्चय कैकेयी के राजा दशरथ से वर माँग लेने के

कारण कृतकार्य नहीं हो सका। यदि राज्याभिषेक का निर्णय फलित ज्योतिष के आधार पर हुआ था तो भी वह गलत सिद्ध हुआ और यदि बिना फलित ज्योतिष के विचार के किया गया तो इससे भी यही सिद्ध होता है कि रामायण काल में फलित ज्योतिष जैसे अवैदिक कृत्यों का अस्तित्व नहीं था। वेदज्ञानी ऋषियों की उपस्थिति में फलित ज्योतिष जैसा कोई अन्धविश्वास पनप भी नहीं सकता था। महाभारत की अनेक घटनाओं के वर्णनों में ऋषि वेदव्यास जी ने फलित ज्योतिष का वर्णन नहीं किया। अतः फलित ज्योतिष महाभारत काल के उत्तरकाल में आरम्भ हुआ। जिन्होंने भी इसका आरम्भ किया वह वेदज्ञान व ईश्वर के सत्य ज्ञान सहित योग-ध्यान-अध्यात्म विद्या से विहीन प्रतीत होते हैं। ऋषि दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश के द्वितीय समुल्लास में जन्म-पत्र की आलोचना कर इसे शोक-पत्र बताया है। उन्होंने जो वर्णन किया है वह सजीव एवं मार्मिक है। सोमनाथ मन्दिर के ध्वस्त करने, लूटने व उसके पतन में फलित ज्योतिष का ही मुख्य योगदान था। यदि मूर्तिपूजा का अन्धविश्वास तथा फलित ज्योतिष के प्रति अनावश्यक विश्वास न होता तो देश व आर्य-हिन्दू जाति को अपमानित करने वाली यह घटना कदापि न होती। ऋषि दयानन्द जी के अनुसार बुद्धिमान एवं विवेकशील मनुष्यों को अपनी सन्तानों का जन्मपत्र नहीं बनवाना चाहिये और न ही किसी फलित ज्योतिषी से अपने बच्चों का भाग्यफल ही पूछना चाहिये अन्यथा वह अनेक असत्य भ्रम एवं मानसिक विकारों से ग्रस्त हो सकते हैं। आर्यसमाजी बनने के बाद से हमने अपने जीवन में कभी फलित ज्योतिष पर विश्वास नहीं किया और हमें इससे हानि कुछ भी नहीं हुई अपितु लाभ अनेक हुए हैं। बच्चों की जितनी बौद्धिक क्षमता व परिवेश था उसके अनुसार उन्होंने शिक्षा प्राप्त की और सभी बच्चे स्वस्थ एवं पुरुषार्थरत् हैं। सभी आर्य विचारधारा को मानते हैं और मूर्तिपूजा एवं फलित ज्योतिष जैसे अन्धविश्वासों से पूर्णतः मुक्त हैं। बच्चों में किसी पर न कभी शनि की दशा आई और न किसी अन्य ग्रह ने कोई प्रकोप किया।

आज का युग विज्ञान का युग है। हम कोई काम करते हैं तो उसके सभी पहलुओं पर विचार कर निर्णय लेते हैं। निर्णय लेने में बुद्धि का ही प्रमुख योगदान होता है। ऋषि दयानन्द जी की कृपा से हमारे पास वेदज्ञान है। हमारा यह संसार परमात्मा ने जीवों के पूर्वजन्मों के कर्मफल प्रदान करने के लिये बनाया है। **'अवश्यमेव हि भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम्'** के अनुसार जीवात्मा को अपने किये हुए प्रत्येक कर्म का फल अवश्य भोगना होता है। हमारे प्रारब्ध के अनुसार ही हमें सुख व दुःख प्राप्त होते हैं। यह व्यवस्था वेद सम्मत एवं तर्क एवं युक्ति के अनुकूल है। फलित ज्योतिष का विधान वेद में न होने से वह त्याज्य है। संसार में यूरोप व अन्य देश भारत से कहीं अधिक भौतिक उन्नति को प्राप्त हैं। वहाँ भारत जैसे फलित ज्योतिष तथा मूर्तिपूजा को कोई नहीं मानता। यदि मानते तो वह भी भारत की तरह अविद्या एवं अविकसित देश होते। हमारे ऋषियों ने सभी विषयों पर ज्ञानपूर्ण रचनायें दी हैं। ६ दर्शन और ११ उपनिषदों के समान विश्व साहित्य में कोई ग्रन्थ नहीं है। फलित ज्योतिष का उनमें कहीं किञ्चित भी उल्लेख नहीं है। वेदानुकूल का ही प्रमाण होता है व उसे ही स्वीकार किया जाता है। फलित ज्योतिष से मनुष्य को कोई लाभ नहीं है अपितु हानि ही हानि है। वेदों के प्रकाण्ड विद्वान् ऋषि दयानन्द ने भी फलित ज्योतिष को व्यक्ति एवं राष्ट्र के लिए अग्राह्य बताया है। हमें ऋषियों की आज्ञाओं व शिक्षाओं का पालन करना चाहिये। इसी से हमारी आर्य हिन्दू जाति को लाभ होगा।

-मनमोहन कुमार आर्य
१९६, चुक्खूवाला-२, देहरादून- २४८००१
चलभाष- ०९४१२९८५१२१

## सत्यार्थप्रकाश प्रचार सहयोग निधि

- **सत्यार्थ प्रकाश से उत्कृष्ट कोई ग्रन्थ नहीं जिसके प्रकाशन में आपकी पुण्य दान राशि का प्रयोग हो।** सत्यार्थ प्रकाश प्रचार हेतु,कम राशि में अधिक संख्या में यह महान् ग्रन्थ जन-जन के हाथों में पहुँच सके, एतदर्थ निम्न योजना निर्मित की गई है:-
- सत्यार्थप्रकाश के प्रचार हेतु कृपया निम्नानुसार सहयोग कर **लागत मूल्य से आधी कीमत में** सत्यार्थप्रकाश का दिया जाना सुनिश्चित करें। आपके द्वारा सहयोगार्थ प्रदान की गई राशि के समक्ष अंकित प्रतियों पर आपका अथवा आपके किसी प्रियजन का चित्र ग्रन्थ पर दिया जावेगा।

| राशि | प्रतियों की संख्या | राशि | प्रतियों की संख्या |
|---|---|---|---|
| १५०००० | दस हजार | ११२५०० | ७५०० |
| ७५००० | ५००० | ३७५०० | २५०० |
| १५००० | १००० | इससे स्वल्प राशि देने वाले दानवीरों के नाम ग्रन्थ में अंकित किये जायेंगे। | |

**आपका दान आयकर अधिनियम की धारा ८० जी के अंतर्गत करमुक्त होगा।** राशि न्यास के नाम ड्राफ्ट या चैक द्वारा भेजें अथवा यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, उदयपुर खाता क्रमांक ३१०१०२०१००४१५१८ में जमा कर सूचित करें।

निवेदक

| भवानीदास आर्य | भंवरलाल गर्ग | डॉ.अमृत लाल तापड़िया |
|---|---|---|
| मंत्री-न्यास | कार्यालय मंत्री | उपमंत्री-न्यास |

हिन्दी दिवस पर विशेष

# हिन्दी की उपेक्षा

नई शिक्षा नीति में कितनी नीति है और कितनी राजनीति यह तो समय आने पर पता चलेगा। किन्तु इस नीति से हिन्दी भाषा की जो दुर्दशा होने वाली है उसका हाल अभी दिख रहा है। केन्द्र सरकार ने नई शिक्षा नीति के प्रारूप में त्रिभाषा

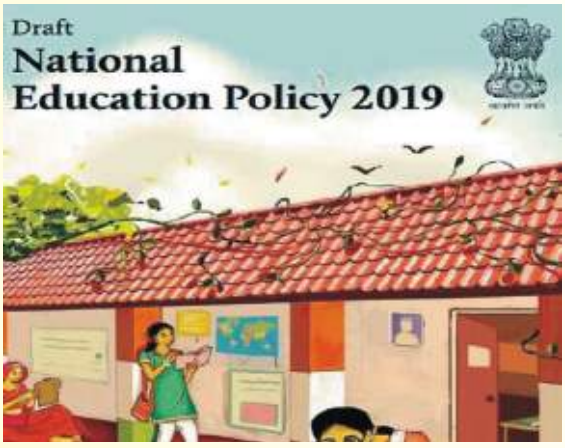


फॉर्मूले को लेकर उठे विवाद के बीच सोमवार को नई शिक्षा नीति का संशोधित प्रारूप जारी कर दिया है। नई शिक्षा नीति के तहत गैर हिन्दी भाषी राज्यों में हिन्दी अनिवार्य किए जाने का उल्लेख नहीं है। यानि अब जो राज्य या स्कूल अगर हिन्दी भाषा को अपने यहाँ लागू नहीं करता उस पर किसी भी प्रकार का दबाव नहीं होगा।

इससे पहले के प्रारूप में समिति ने गैर हिन्दी प्रदेशों में हिन्दी की शिक्षा को अनिवार्य बनाने का सुझाव दिया था।

तमिलनाडु में द्रमुक और अन्य दलों ने नई शिक्षा नीति के प्रारूप में त्रिभाषा फॉर्मूले का विरोध किया था और आरोप लगाया था कि यह हिन्दी भाषा थोपने जैसा है। असल में केन्द्र सरकार एक त्रिभाषा सूत्र लेकर आगे बढ़ रही थी जिसमें प्रान्तीय भाषा, राजभाषा हिन्दी और अंग्रेजी शामिल थीं। जवाहरलाल नेहरु के जमाने में बने इस सूत्र को तमिल पार्टियों ने तब भी रद्द कर दिया था और १९६५ में लालबहादुर शास्त्री के जमाने में हिन्दी के विरोध में इतना बड़ा तमिल आन्दोलन हुआ था कि उसमें दर्जनों लोग मारे गए और सरकार ने त्रिभाषा सूत्र को बस्ते में डाल दिया था। इस बार भी ऐसा प्रतीत हो रहा है कि नरेन्द्र मोदी की मजबूत बहुमत वाली और राष्ट्रहित के नाम पर चुनाव जीतने वाली सरकार ने घुटने टेक दिए हों। क्योंकि यदि ये विरोध दक्षिण भारत के प्रबुद्ध लोग, विशेषज्ञ, सामाजिक कार्यकर्त्ता, या युवावर्ग की ओर से होता तो समझ में आता। ये विरोध सिर्फ तमिलनाडु के राजनितिक दल कर रहे हैं जो समझ से परे है। जैसे पिछले सत्तर साल से हिन्दी भाषा पर आघात पहुँचाया गया है, एक बार वैसा ही पुनः देखने को मिल रहा है। न इस मुद्दे पर उत्तर भारत का कोई राजनितिक दल अपना मुँह खोल रहा है और न ही इस पर संघ के संचालकों की भी कोई भूमिका सामने आई है, बल्कि उनकी ओर से भी मौन स्वीकृति कही जा रही है।

देखा जाये तो भारत धर्मप्राण देश है हमारे धर्म, संस्कृति व प्राचीन साहित्य का माध्यम संस्कृत तथा हिन्दी भाषा हैं। किसी भी राष्ट्र का अस्तित्व, उसकी संस्कृति, उसकी सभ्यता उसका धर्म यह सब उस राष्ट्र की मात्रभाषा से जुड़े होते हैं, यदि मात्रभाषा का ही वध कर दिया जाये तो यह सब चीजें कितने दिन जीवित रहेगी स्वयं विचार कीजिए? हमने ७० वर्ष पहले बलिदान देकर राजनैतिक स्वतंत्रता पाई थी लेकिन ये ७० वर्ष बीत जाने के बाद भी हमारी हिन्दी भाषा स्वतन्त्र नहीं हो पाई हैं। चुनाव के समय राजनेता मंचों से हिन्दी में भाषण देते हैं, हिन्दी भाषा के माध्यम से वोट बटोरते हैं जब सत्ता की देहरी पर पहुँच जाते हैं तब अचानक इस भाषा से

मुँह मोड़ लेते हैं।

यदि आज भाषा के प्रश्न पर आप गंभीरता से विचार करें तो पूरे भारत में त्रिभाषा सूत्र बिलकुल एक पाखण्ड की तरह दिखाई देगा। आखिर क्यों त्रिभाषा सूत्र में अंग्रेजी को ढोया जा रहा है जबकि राष्ट्र की एकता अखण्डता के लिए त्रिभाषा की जगह द्विभाषा सूत्र लागू किया जाना चाहिए था। यानि अपनी प्रान्तीय भाषा सीखो और हिन्दी भारत-भाषा सीखो इसके बाद जो राज्य सरकार या स्कूल अंग्रेजी रखना चाहे रख सकता है इसकी उसे स्वतंत्रता प्रदान कर देनी चाहिए।

असल में यह रोग उसी समय हमारे तत्कालीन नेताओं ने पैदा कर दिया था जब उन्होंने भाषा के आधार पर राज्यों के पुनर्गठन की माँग को स्वीकार किया था। भले ही यह उस समय की राजनितिक अदूरदर्शिता रही हो, लेकिन राज्यों के गठन में जैसे सभी राज्यों ने रुपये को राष्ट्रीय मुद्रा के रूप में स्वीकार किया था उसी तरह उस समय ऐसी संवैधानिक व्यवस्था बना देनी थी कि केन्द्र सरकार की राजभाषा को सभी राज्यों की राजभाषा मानी जाए। किन्तु ऐसा नहीं हो सका और भाषावार राज्यों की माँग को स्वीकार किया गया जिसका दंश आज हिन्दी भाषा सबसे ज्यादा झेल रही है।

देखा जाये तो आज देश में हिन्दी समझने और बोलने वालों की संख्या लगभग ७० करोड़ के आस-पास है। देश से बाहर भी लाखों लोग इसे जानते-समझते हैं, प्रयोग करने वालों की संख्या के लिहाज से यह चीन की भाषा के बाद दुनिया की दूसरी सबसे बड़ी भाषा है। लेकिन इसके बावजूद भी हिन्दी को कमजोर अनपढ़ गरीब लोगों की भाषा बना दिया गया। क्या ७० करोड़ लोग कम होते हैं एक भाषा को समझने बोलने के हिसाब से कि वह अपने देश की राजभाषा भी न बन सके? शायद इतनी जनसंख्या समूचे यूरोपीय देशों की है। वर्तमान में संख्याबल के अनुसार भी हिन्दी उन सभी भाषाओं में सबसे शीर्ष स्थान पर है जो भारत में प्रचलित है, इसलिए भारतीय के परिचायक के रूप में हिन्दी को अनिवार्य भाषा बनाया जाए। हाँ अन्य भारतीय भाषाओं को भी हिन्दी के साथ तालमेल स्थापित करने की दिशा में अनुवाद आदि माध्यम से जोड़ने का प्रबन्ध किया जाय। स्वतन्त्रता के ७० वर्ष बाद भी यदि हिन्दी का स्थान एक ऐसी विदेशी अंग्रेजी भाषा के साथ साझा करना पड़े जिसे भारत में बोलने समझने वाले कुल ५ प्रतिशत लोग भी नहीं तो यह हिन्दी का दुर्भाग्य है। इसके अलावा यदि ५ प्रतिशत तमिल भाषी राजनेताओं के सामने राजभाषा को लेकर केन्द्र की मजबूत सरकार को घुटने टेकने पड़े तो यह सरकारी कमजोरी है हिन्दी की नहीं।

विनय आर्य
महामंत्री, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली

न्यास द्वारा प्रकाशित सत्यार्थ प्रकाश
₹100 के स्थान पर अब ₹45 में उपलब्ध
सौ प्रतियाँ लेने पर ₹4000
(डाक खर्च अतिरिक्त)
₹15000 सत्यार्थ प्रकाश प्रचार सहयोग राशि देकर एक हजार प्रतियों पर अपना वा अपने किन्हीं परिचित का विवरण फोटो सहित छपवावें।

## संरक्षक मण्डल - सत्यार्थ सौरभ (₹११,०००)

स्वामी (डॉ.) ओमानन्द सरस्वती, श्रीमान् आनन्द कुमार आर्य, श्री भवानी दास आर्य, श्री सुरेश चन्द्र अग्रवाल, श्री रतिराम शर्मा, श्री दीनदयाल गुप्त, श्री बी.एल. अग्रवाल, श्री कै. देवरत्न आर्य, श्री चन्दूलाल अग्रवाल, श्री मिठाईलाल सिंह, श्री नारायण लाल मित्तल, श्री सुधाकर पीयूष, श्रीमती शारदा गुप्ता, आर्य परिवार संस्था कोटा, श्रीमती आभा आर्या, गुप्त दान दिल्ली, आर्यसमाज गाँधीधाम, गुप्तदान उदयपुर, श्री राजकुमार गुप्ता एवं सरला गुप्ता, श्री मोती लाल आर्य, श्री लक्ष्मण सराफ, श्रीमती पुष्पा गुप्ता, श्री जयदेव आर्य, श्री श्रवण कुमार गुप्ता, श्रीमती सरोज वर्मा, श्री विवेक बंसल, श्री दीपचंद आर्य, श्री एम.पी. सिंह, प्रो. आर.के.एरन, श्री खुशहालचन्द आर्य, श्री विजय तायलिया, श्री वीरेन्द्र मित्तल, स्वामी (डॉ.) आर्येशानन्द सरस्वती, स्वामी प्रवासानन्द सरस्वती, स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य, श्री भारतभूषण गुप्ता, श्री कृष्ण चौपड़ा, श्री रामप्रकाश छाबड़ा, श्री विकास गुप्ता, श्री एम. विजेन्द्र कुमार टाक, श्री नरेश कुमार राणा, डॉ.मोतीलाल शर्मा, डी.ए.वी. एकेडमी, टाण्डा, श्री प्रधान जी, मध्यभारतीय आ. प्र. सभा, श्री रघुनाथ मित्तल, मिश्रीलाल आर्य कन्या इण्टर कॉलेज, टाण्डा, श्री प्रह्लादकृष्ण एवं श्रीमती प्रभा भार्गव श्री लोकेश चन्द्र टांक, श्रीमती गायत्री पंवार, डॉ. वेद प्रकाश गुप्ता, श्री वीरमुखी, डॉ. अमृतलाल तापड़िया, आर्य समाज हिरणमगरी, उदयपुर, श्री सुरेशपाल, यू.एस.ए., श्री राजेन्द्र कुमार सक्सेना, कोटा, श्रीमती सुमन सूद, कन्डा घाट (सोलन), माता शीला सेठी, न्यूजर्सी, डॉ. एस. के. माहेश्वरी, उदयपुर, श्री राजेश तिवारी (शिक्षक), ग्वालियर, श्रीमती सविता सेठी, चण्डीगढ़, डॉ. पूर्णसिंह डबास, नई दिल्ली, श्री बृज वधवा, अम्बाला शहर, श्री हजारी लाल आर्य, उदयपुर, डॉ. सत्यप्रकाश, हरदोई, राजेन्द्रपाल वर्मा, वडोदरा, प्रिन्सीपल डी. ए. वी. एच. जेड. एल. सी. सै. स्कूल, दरीबा (राजसमन्द), आचार्य आनन्द पुरुषार्थी, होशंगाबाद, श्री ओ३म् प्रकाश अग्रवाल, नोएडा, श्री भरत ओ३म् प्रकाश अग्रवाल, अहमदाबाद, श्री सुरेन्द्र कर्मचन्दानी, पुणे, डॉ. आनन्द कुमार शर्मा, नई दिल्ली, श्री रमेश चन्द्र गुप्ता, यू.एस.ए., श्री शुद्धबोध शर्मा; श्रीगंगानगर, श्री कन्हैया लाल आर्य, शाहपुरा, श्री अशोक कुमार वार्ष्णेय; बडोदरा, डॉ. सत्या पी. वार्ष्णेय; कनाडा, नागेन्द्र प्रसाद गुप्ता, बगहा (बिहार), श्री गणेशदत्त गोयल, बुलन्दशहर (उ. प्र.), श्री पूर्णचन्द आर्य, कानोड़, श्री वेदप्रकाश आर्य; नई दिल्ली, श्री सत्यनारायण शर्मा; उदयपुर

# ‘डल’ का दर्पण फिर चमकेगा

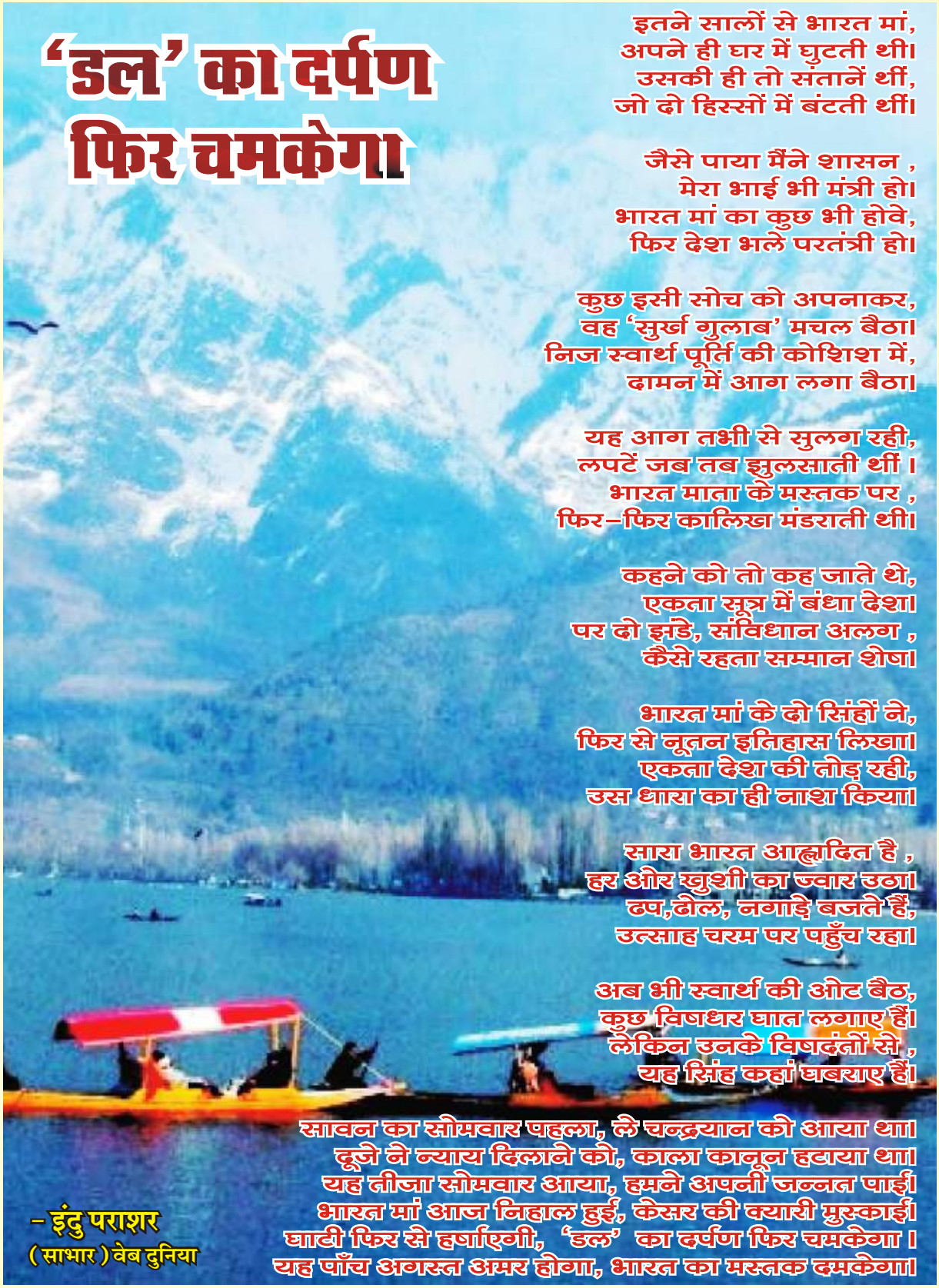

इतने सालों से भारत मां,
अपने ही घर में घुटती थी।
उसकी ही तो संतानें थीं,
जो दो हिस्सों में बंटती थीं।

जैसे पाया मैंने शासन ,
मेरा भाई भी मंत्री हो।
भारत मां का कुछ भी होवे,
फिर देश भले परतंत्री हो।

कुछ इसी सोच को अपनाकर,
वह ‘सुर्ख गुलाब’ मचल बैठा।
निज स्वार्थ पूर्ति की कोशिश में,
दामन में आग लगा बैठा।

यह आग तभी से सुलग रही,
लपटें जब तब झुलसाती थीं ।
भारत माता के मस्तक पर ,
फिर–फिर कालिख मंडराती थी।

कहने को तो कह जाते थे,
एकता सूत्र में बंधा देश।
पर दो झंडे, संविधान अलग ,
कैसे रहता सम्मान शेष।

भारत मां के दो सिंहों ने,
फिर से नूतन इतिहास लिखा।
एकता देश की तोड़ रही,
उस धारा का ही नाश किया।

सारा भारत आह्लादित है ,
हर ओर खुशी का ज्वार उठा।
ढप,ढोल, नगाड़े बजते हैं,
उत्साह चरम पर पहुँच रहा।

अब भी स्वार्थ की ओट बैठ,
कुछ विषधर घात लगाए हैं।
लेकिन उनके विषदंतों से ,
यह सिंह कहां घबराए हैं।

सावन का सोमवार पहला, ले चन्द्रयान को आया था।
दूजे ने न्याय दिलाने को, काला कानून हटाया था।
यह तीजा सोमवार आया, हमने अपनी जन्नत पाई।
भारत मां आज निहाल हुई, केसर की क्यारी मुस्काई।
घाटी फिर से हर्षाएगी, ‘डल’ का दर्पण फिर चमकेगा ।
यह पाँच अगस्त अमर होगा, भारत का मस्तक दमकेगा।

– इंदु पराशर
( साभार ) वेब दुनिया

# मांसभक्षण के पक्ष में दिए जाने वाले कतिपय वेदमंत्रों पर विचार

गतांक से आगे.....

**चतुर्थ मंत्र**

यथा मांसं यथा सुरा यथाक्षा अधिदेवने।
यथा पुंसो वृषण्यत स्त्रियां निहन्यते मनः।
एवा ते अघ्न्ये मनोधि वत्से नि हन्यताम्।। - अथर्व. ६/७०/१

इस पर सरिता के लेखक ने लिखा है- 'जैसे मांसभक्षक को मांस, शराबी को शराब, जुआरी को फलक पर पड़े पासे और काम-पीड़ित पुरुष को नारी प्यारी होती है, वैसे ही हे गौ, तुम्हें यह बछड़ा प्यारा हो। यह हर्ष का विषय है कि क्रमशः मांसभक्षण कम होता गया, तो भी कुछ अवसर ऐसे थे जिन पर मांस भक्षण धड़ल्ले से होता था।'

मन्त्रार्थ में सरिता के लेखक ने सायण का ही अनुसरण किया है। पर वस्तुतः मन्त्र में मांस खाने की तो कोई चर्चा ही नहीं। 'जाकी रही भावना जैसी' की उक्ति यहाँ चरितार्थ होती है। यह भाव भी तो लिया जा सकता है- 'जैसे अस्थिपंजरमात्र शरीर की अपेक्षा मांस-भरे शरीर को देखकर प्रीति उपजती है, जैसे सुरा अर्थात् 'लक्ष्मी' को सब कोई चाहता है, जैसे इन्द्रियाँ भोग-विलास में रमती हैं, वैसे ही हे गौ, तेरा मन बछड़े में रमे।'

**पंचम मंत्र**

अपूपवान्मांसवांश्चरुरेह सीदतु।
लोककृतः पथिकृतो यजामहे ये देवानां हुतभागा इह स्थ।। - अथर्व. १८/४/२०

सरिता के लेखक ने 'देवों व पितरों को मांस-भोजन देने के उल्लेख वेदों व अन्य धर्मग्रन्थों में सहज ही द्रष्टव्य हैं' यह लिखकर इसके उदाहरण रूप में उपर्युक्त मंत्र उद्धृत किया है। मंत्रार्थ यह किया है- 'मालपुओं वाला तथा मांस वाला भात यहाँ है। यज्ञभागी देवों में से जो यहाँ हों, हम उन (मृतक के लिए) लोकनिर्माता व पथनिर्माता देवों का पूजन करते हैं।' फिर लिखा है कि 'उपर्युक्त वेदमंत्र मृतक के अस्थिचयन के समय पढ़ा जाता था।'

यहाँ मन्त्रार्थ अस्थिचयन के विनियोग से स्वतंत्र होकर भी किया जा सकता है। परन्तु विचारणीय प्रश्न क्योंकि चरु का मांसवाला होना ही है, अतः विनियोग के विवाद में हम नहीं पड़ते। प्रश्न यह उपस्थित होता है कि यदि चरु में मालपुओं के साथ मांस भी मिलाना है, तो यह मांस किस पशु का हो? इसे सूक्त में आगे स्वयं स्पष्ट कर दिया है कि यह मांस गाय और बछड़े का होगा। पर पाठक भ्रम में न पड़ें, ये गाय और बछड़े सचमुच के गाय-बछड़े नहीं हैं, अपितु धाना गाय है और तिल बछड़ा है।

धाना धेनुरभवद्वत्सो अस्यास्तिलोऽभवत्।
तां वै यमस्य राज्ये अक्षितामुप जीवति।। - अथर्व. १८/४/३२

एवं स्वयं वेद के प्रमाण से ही यहाँ मांस शब्द से धाना और तिल ग्राह्य हैं।

सरिता के लेखक ने मांसभक्षण के पोषण में वेदमंत्र के ये पाँच मंत्र ही दिए हैं। हमने परीक्षा करके देख लिया है कि इनसे मांसभक्षण की पुष्टि नहीं होती। अतः पाठकों को इस भ्रम में नहीं रहना चाहिए कि वेद मांसभक्षण का समर्थन या विधान करते हैं।

- आचार्य रामनाथ वेदालंकार
(साभार- आर्ष-ज्योति)

# वेदों में वर्णित सच्चे शिव की स्थिति

हिन्दू समाज में मिथ्या मान्यता है कि वेद में उसी शिव का वर्णन है जिसके नाम पर अनेक पौराणिक कथाओं का सृजन हुआ है। उन्हीं शिव की पूजा-उपासना वैदिक काल से आज तक चली आती है। किन्तु वेद के मर्मज्ञ इस विचार से सहमत नहीं हैं। उनके अनुसार वेद तथा उपनिषदों का शिव निराकार ब्रह्म है।

पुराणों में वर्णित शिव जी परम योगी और परम ईश्वरभक्त थे। वे एक निराकार ईश्वर 'ओ३म्' की उपासना करते थे। कैलाशपति शिव वीतरागी महान् राजा थे। उनकी राजधानी कैलाश थी और तिब्बत का पठार और हिमालय के वे शासक थे। हरिद्वार से उनकी सीमा आरम्भ होती थी। वे राजा होकर भी अत्यन्त वैरागी थे। उनकी पत्नी का नाम पार्वती था जो राजा दक्ष की कन्या थी। उनकी पत्नी ने भी गौरीकुण्ड, उत्तराखण्ड में रहकर तपस्या की थी। उनके पुत्रों के नाम गणपति और कार्तिकेय थे। उनके राज्य में सब कोई सुखी था। उनका राज्य इतना लोकप्रिय हुआ कि कालान्तर में साक्षात् ईश्वर के नाम शिव से उनकी तुलना की जाने लगी।

**वेदों के शिव-**

हम प्रतिदिन अपनी सन्ध्या उपासना के अन्तर्गत

**नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः शंकराय च**
**मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च।** - यजु. १६/४१

के द्वारा परमपिता का स्मरण करते हैं।

अर्थ- जो मनुष्य सुख को प्राप्त कराने हारे परमेश्वर और सुखप्राप्ति के हेतु विद्वान् का भी सत्कार, कल्याण करने और सब प्राणियों को सुख पहुँचाने वाले का भी सत्कार, मंगलकारी और अत्यन्त मंगलस्वरूप पुरुष का भी सत्कार करते हैं, वे कल्याण को प्राप्त होते हैं।

इस मन्त्र में शंभव, मयोभव, शंकर, मयस्कर, शिव, शिवतर शब्द आये हैं जो एक ही परमात्मा के विशेषण के रूप में प्रयुक्त हुए हैं।

वेदों में ईश्वर को उनके गुणों और कर्मों के अनुसार बताया है-

**त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।**
**उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्॥** - यजु. ३/६०

विविध ज्ञान भण्डार, विद्यात्रयी के आगार, सुरक्षित आत्मबल के वर्धक परमात्मा का यजन करें। जिस प्रकार पक जाने पर खरबूजा अपने डण्ठल से स्वतः ही अलग हो जाता है वैसे ही

हम इस मृत्यु के बन्धन से मुक्त हो जायें, मोक्ष से न छूटें।

**या ते रुद्र शिवा तनूरघोराऽपापकाशिनी।**
**तया नस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभि चाकशीहि॥** - यजु. १६/२

हे मेघ वा सत्य उपदेश से सुख पहुँचाने वाले दुष्टों को भय और श्रेष्ठों के लिए सुखकारी शिक्षक विद्वान्! जो आप की घोर उपद्रव से रहित सत्य धर्मों को प्रकाशित करनेहारी कल्याणकारिणी देह वा विस्तृत उपदेश रूप नीति है उस अत्यन्त सुख प्राप्त करने वाली देह वा विस्तृत उपदेश की नीति से हम लोगों को आप सब ओर से शीघ्र शिक्षा कीजिये।

अध्यवोचदधिवक्ता प्रथमो दैव्यो भिषक्।
अहींश्च सर्वाञ्जम्भयन्त्सर्वाश्च यातुधान्योऽधराचीः परा सुव।।
– यजु. १६/५

हे रुद्र रोगनाशक वैद्य! जो मुख्य विद्वानों में प्रसिद्ध सबसे उत्तम कक्षा के वैद्यकशास्त्र को पढ़ाने तथा निदान आदि को जान के रोगों को निवृत्त करनेवाले आप सब सर्प के तुल्य प्राणान्त करनेहारे रोगों को निश्चय से ओषधियों से हटाते हुए अधिक उपदेश करें सो आप जो सब नीच गति को पहुँचाने वाली रोगकारिणी ओषधि वा व्यभिचारिणी स्त्रियाँ हैं, उनको दूर कीजिये।

या ते रुद्र शिवा तनूः शिवा विश्वाहा भेषजी।
शिवा रुतस्य भेषजी तया नो मृड जीवसे।। – यजु. १६/४६

हे राजा के वैद्य! तू जो तेरी कल्याण करने वाली देह वा विस्तारयुक्त नीति देखने में प्रिय ओषधियों के तुल्य रोगनाशक और रोगी को, सुखदायी, पीड़ा हरने वाली है उससे जीने के लिए सब दिन हम को सुखी कर।

उपनिषदों में भी शिव की महिमा निम्न प्रकार से है–

स ब्रह्मा स विष्णुः स रुद्रस्सः शिवस्सोऽक्षरस्सः परमः स्वराट्।
स इन्द्रस्सः कालाग्निस्स चन्द्रमाः।। – कैवल्यो.१/८

वह जगत् का निर्माता, पालनकर्त्ता, दण्ड देने वाला, कल्याण करने वाला, विनाश को न प्राप्त होने वाला, सर्वोपरि, शासक, ऐश्वर्यवान्, काल का भी काल, शान्ति और प्रकाश देने वाला है।

प्रपञ्चोपशमं शान्तं शिवमद्वैतं चतुर्थं मन्यन्ते स आत्मा स विज्ञेयः। – माण्डूक्योपनिषद् ७

प्रपञ्च जाग्रतादि अवस्थायें जहाँ शान्त हो जाती हैं, शान्त आनन्दमय अतुलनीय चौथा तुरीयपाद मानते हैं वह आत्मा है और जानने के योग्य है। यहाँ शिव का अर्थ शान्त और आनन्दमय के रूप में देखा जा सकता है।

सर्वाननशिरोग्रीवः सर्वभूतगुहाशयः।
सर्वव्यापी स भगवांस्तस्मात्सर्वगतः शिवः।। – श्वेता.३/११

जो इस संसार की उत्पत्ति, स्थिति और प्रलय का कर्त्ता एक ही है, जो सब प्राणियों के हृदयाकाश में विराजमान है, जो सर्वव्यापक है, वही सुखस्वरूप भगवान् शिव सर्वगत अर्थात् सर्वत्र प्राप्त हैं।

इसे और स्पष्ट करते हुए कहा है–

सूक्ष्मातिसूक्ष्मं कलिलस्य मध्ये विश्वस्य स्रष्टारमनेकरूपम्।
विश्वस्यैकं परिवेष्टितारं ज्ञात्वा शिवं शान्तिमत्यन्तमेति।।
– श्वेता.४/१४

परमात्मा अत्यन्त सूक्ष्म है, हृदय के मध्य में विराजमान है, अखिल विश्व की रचना अनेक रूपों में करता है। वह अकेला अनन्त विश्व में सब ओर व्याप्त है। उसी कल्याणकारी परमेश्वर को जानने पर स्थाई रूप से मानव परम शान्ति को प्राप्त होता है।

न चेशिता नैव च तस्य लिंगम्।। – श्वेता. ६/९

उस शिव का कोई नियन्ता नहीं और न उसका कोई लिंग वा निशान है।

योगदर्शन में परमात्मा की प्रतीति इस प्रकार की गई है–

क्लेशकर्मविपाकाशयैरपरामृष्टः पुरुषविशेष ईश्वरः।।
– योगदर्शन १/२४

जो अविद्यादि क्लेश, कुशल, अकुशल, इष्ट, अनिष्ट और मिश्र फलदायक कर्मों की वासना से रहित है, वह सब जीवों से विशेष, ईश्वर कहाता है।

स एष पूर्वेषामपि गुरुः कालेनानवच्छेदात्।। – योगदर्शन १/२६

वह ईश्वर प्राचीन गुरुओं का भी गुरु है। उसमें भूत भविष्यत् और वर्तमान काल का कुछ भी सम्बन्ध नहीं है, क्योंकि वह अजर, अमर, नित्य है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने भी अपने पुस्तक सत्यार्थप्रकाश में निराकार शिवादि नामों की व्याख्या इस प्रकार की है–

(रुदिर् अश्रुविमोचने) इस धातु से ''णिच्'' प्रत्यय होने से ''रुद्र'' शब्द सिद्ध होता है। ''यो रोदयत्यन्यायकारिणो जनान् स रुद्रः'' जो दुष्टकर्म करने हारों को रुलाता है, इससे उस परमेश्वर का नाम "रुद्र" है।

यन्मनसा ध्यायति तद्वाचा वदति यद्वाचा वदति तत् कर्मणा करोति यत् कर्मणा करोति तदभिसंपद्यते।।
यह यजुर्वेद के ब्राह्मण का वचन है।

जीव जिसका मन से ध्यान करता, उसको वाणी से बोलता, जिसको वाणी से बोलता, उसको कर्म से करता, जिसको कर्म से करता, उसी को प्राप्त होता है। इससे क्या सिद्ध हुआ कि जो जीव जैसा कर्म करता है, वैसा ही फल पाता है। जब दुष्टकर्म करने वाले जीव ईश्वर की न्यायरूपी व्यवस्था से दुःखरूप फल पाते, तब रोते हैं और इसी प्रकार ईश्वर उनको रुलाता है इसलिये परमेश्वर का नाम "रुद्र" है।।

(डुकृञ् करणे) ''शम्'' पूर्वक इस धातु से ''शंकर'' शब्द सिद्ध हुआ है। ''यः शंकल्याणं सुखं करोति स शंकरः'' जो कल्याण अर्थात् सुख का करने हारा है, इससे उस ईश्वर का नाम ''शंकर'' है।

(महत्) शब्द पूर्वक ''देव'' शब्द से ''महादेव'' सिद्ध होता है। ''यो महतां देवः स महादेवः'' जो महान् देवों का देव अर्थात् विद्वानों का भी विद्वान्, सूर्यादि पदार्थों का प्रकाशक है, इसलिये उस परमात्मा का नाम ''महादेव'' है।

(शिवु कल्याणे) इस धातु से ''शिव'' शब्द सिद्ध होता है। ''बहुलमेतन्निदर्शनम्'' इससे शिवु धातु माना जाता है। जो

कल्याणस्वरूप और कल्याण का करने हारा है, इसलिये उस परमेश्वर का नाम ''शिव'' है।

**निष्कर्ष**- उपरोक्त लेख द्वारा योगी शिव और निराकार शिव में अन्तर बतलाया है। ईश्वर के अनगिनत गुण होने के कारण अनगिनत नाम हैं। शिव भी इसी प्रकार से ईश्वर का एक नाम है। आईये निराकार शिव की स्तुति, प्रार्थना एवं उपासना करें।

- डॉ. नरेन्द्र कुमार सनाढ्य
६१, जे.पी. नगर, सेक्टर-८, हिरणमगरी, उदयपुर ( राज. )

## विश्व भर से सहस्रों की संख्या में आने वाले दर्शकों के नवलखा महल, उदयपुर के बारे में विचार

आज दिनांक २८ जुलाई २०१९ रविवार को उदयपुर स्थित ऋषि दयानन्द सरस्वती की पुण्य कर्मस्थली व सत्यार्थ प्रकाश सृजन स्थली महर्षि दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, नवलखा महल में आने का सुअवसर मिला। न्यास भवन में स्थापित ऋषि वेद वीथिका देखकर हार्दिक प्रसन्नता हुई। निश्चय ही जिस मनोयोग, सूक्ष्म चिन्तन सर्व हृदय ग्राह्य प्रेरक दर्शन पर आधारित वेद वेदांग ऋषि परम्परा, महर्षि दयानन्द जीवन वृत्त, भारत के स्वतंत्रता संग्राम सैनानी, विद्या- अविद्या, जीवन दर्शन एवं आचार विचार आदि पर केन्द्रित चित्रमय झांकियां प्रस्तुत की हैं वे नमनीय, वन्दनीय, अभिनन्दनीय व अनुकरणीय हैं। इसके लिए जहां स्वनामधन्य स्मृतिशेष पुरुषार्थियों महानुभावों का कृतज्ञता ज्ञापन आभार है, वहीं प्रत्यक्ष रूप में ट्रस्ट के कार्यकारी अध्यक्ष श्री अशोक आर्य जी व उनके सहयोगियों को इसका विशेष श्रेय है।

यह वीथिका आगे आने वाले दिनों में नई पीढ़ी को वैदिक धर्म, आर्य समाज व ऋषि दयानन्द के मिशन को जानने समझने व परखने की दिशा में एक मील का पत्थर सिद्ध होगी व नव संततियों को शिक्षा संस्कार सभ्यता व संस्कृति से आत्म साक्षात्कार करने का अवसर प्रदान करेगी।

इस स्तुत्य प्रयास व रचनात्मक कदम के लिए पुनः श्री आर्य जी को कोटिशः नमन। साथ ही ईश्वर से अन्तर्मन से कामना है कि वे उन्हें एतदर्थ अद्भुत सामर्थ्यशक्ति, दीर्घायुष्य व प्रज्ञा ऋतम्भरा प्रदान करें, ताकि वे इसी प्रकार एतद् दिशा में निरन्तर उत्तरोत्तर तत्पर रहें। इति मंगला कामनाः। हार्दिक आभार।

डॉ. बीना रस्तोगी-डॉ. अशोक आर्य
सम्पादक- आर्यावर्त्त केसरी, मुरादाबादी गेट, अमरोहा

पूरा नाम-
चलभाष-

## सत्यार्थप्रकाश पहेली- ०९/१९

सत्यार्थ सौरभ सदस्य संख्या-

रिक्त स्थान भरिये- सत्यार्थप्रकाश जैसे महान् ग्रन्थ का स्वाध्याय कीजिए। ( नवम समुल्लास पर आधारित )- पुरस्कार प्राप्त करिये

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ प | १ | मा | १ | २ | ति | ३ | म्ब २ |
| ३ | ३ | श्य ३ | ४ मि | ४ | ४ | री ४ | ५ |
| ६ | प ६ | ६ | त ६ | ७ ए | ७ | | स ७ |

### संकेत ( बाएँ से दाएँ ) ऊपर से नीचे न भरें।

१. कर्मों का साक्षी कौन है?
२. यदि दो पदार्थ पृथक् नहीं है तो उनका क्या नहीं बन सकता?
३. आकाश दृश्य है वा अदृश्य?
४. वेदान्तियों ने सत्यस्वरूप परमात्मा को कैसा बना दिया?
५. वेदान्तियों की अध्यारोप की धारणा मिथ्या है कि नहीं?
६. कोई कहे कि चोर कोतवाल को दण्डे, तो यह बात कैसी है?
७. ब्रह्म कैसा है?

**सत्यार्थ प्रकाश पहेली- ०७/१९ का सही उत्तर**

१. तिब्बत २. विन्ध्याचल ३. आर्य ४. परमाणु ५. साठ ६. त्रसरेणु ७. परमेश्वर

''विस्तृत नियम पृष्ठ १३ पर पढ़ें एवं ₹५१०० पुरस्कार प्राप्त करें।''

कार्यालय में हल की हुई पहेली प्राप्त करने की अन्तिम तिथि- १५ अक्टूबर२०१९

**प्रश्नः**- हमारा प्रश्न कहीं दूर न चला जाए। इसलिए हम उसी प्रसंग में पूछते हैं कि वे ऋचाएँ कितने प्रकार की होती हैं?

**उत्तर**- जिन ऋचाओं से महायोगी महर्षि लोग सब सत्य विद्याओं की स्तुति करते हैं सो तीन प्रकार की हैं।

**१.परोक्षकृता २.प्रत्यक्षकृता ३.आध्यात्मिकी।**

उनमें से कई एक मंत्र परोक्ष अर्थात् अप्रत्यक्ष अर्थ के प्रतिपादन करने वाले हैं। कई एक प्रत्यक्ष अर्थात् प्रसिद्ध अर्थ के और कई एक आध्यात्मिक अर्थात् जीव, परमेश्वर और सब पदार्थों के कार्यकारण के प्रतिपादन करने वाले हैं। अर्थात् त्रिकालस्थ जितने पदार्थ और विद्या हैं, उनके विधान करने वाले मंत्र ही हैं। इसी कारण इनका नाम देवता है।

**प्रश्न**- निरुक्त के इस वचन से तो यह सिद्ध नहीं होता कि प्रत्येक ऋचा तीन प्रकार की होती है और उसके अर्थ भी तीन होते हैं?

**उत्तर**- ऋषि दयानन्द जी के भाष्य में भी एक ऋचा के तीन अर्थ जो विद्वानों द्वारा मंडित हैं- कहीं नहीं किए गए। मैं ऐसे विद्वानों से निवेदन करता हूँ- अगर वे अपने इस मत पर दृढ़ हैं कि प्रत्येक ऋचा के तीन अर्थ आध्यात्मिक, आधिभौतिक और आधिदैविक होते हैं और उनमें सामर्थ्य है तो मैं ऐसे मंत्र उनकी सेवा में रखने को तैयार हूँ जिनका त्रिविध अर्थ करके दिखाएँ।

**प्रश्न**- कृपया मंत्रार्थ प्रक्रिया कि कैसे मन्त्रार्थ होता है, उसका वर्णन कीजिए?

**उत्तर**-

**तत्प्रकृतीतरद्वर्तनसामान्यादित्ययं मन्त्रार्थचिन्ताभ्यूहोऽभ्यूढोऽपि श्रुतितोऽपि तर्कतो न तु पृथक्त्वेन मन्त्रानिर्वक्तयाः, प्रकरणश एव तु निर्वक्तव्या नह्येषु प्रत्यक्षमस्त्यनृषेरतपसो वा।**

अर्थात् उस मंत्र समूह= पद, शब्द-अक्षर समुदायों की इतरत् अर्थात्-परस्पर विशेष्य विशेषणता से सामान्यवृत्ति में वर्तमान मंत्रों के अर्थ ज्ञान की चिन्ता होती है कि इस मंत्र का कौन अर्थ होगा? ऐसी अभ्यूहा अर्थात् बुद्धि में आमिमुख्य से ऊहा= विशेषज्ञानार्थ तर्क मनुष्य के द्वारा करना चाहिए। ये मंत्रश्रुति से= श्रवण मात्र से और केवल तर्क मात्र से पृथक् पृथक् निश्चय से नहीं अर्थ करने चाहिए किन्तु प्रकरणानुकूल पूर्वापर सम्बन्ध से ही अर्थ करने चाहिए। परन्तु इन मंत्रों में अनृषि= जो ऋषि नहीं हैं, अतपस= जो तपस्वी नहीं हैं, अशुद्धान्तःकरण अविद्वान् हैं उनको प्रत्यक्ष ज्ञान नहीं होता है!

इस निरुक्त के वचन में कई शब्द ऐसे हैं जो अत्यन्त गूढार्थ रखते हैं और स्पष्टता हेतु व्याख्या चाहते हैं-

**१. प्रकृति मंत्र समूह २.इतरत् ३.सामान्यवृत्ति ४.चिन्ता ५.अभ्यूहा।**

प्रथम हम प्रकृति को खोलते हैं- तत्प्रकृति अर्थात् तस्य मंत्रसमूहस्य उस मंत्र समूह की प्रकृति अर्थात् पद शब्दाक्षर समुदाय ही है। उन प्रकृतियों अर्थात् व्यञ्जन और स्वर दोनों में से इतरत् स्वर नाम हैं। शंका होती है कि शब्द व्यञ्जन क्यों नहीं लिया गया? उसका समाधान है कि व्यञ्जन में वर्तन- सामान्यता नहीं है। क्योंकि स्वर ही व्यञ्जन में सामान्यवृत्ति में यानी समान्यतया रहता है। यह अनुशीलन करना सबकी मति के स्तर से परे है। दूसरा पद शब्द अक्षर समुदाय में एक विशेष सम्बन्ध विशेष्य और विशेषण का है जिसको सायणादि आर्यावर्त्तदेशस्थ विद्वान् तथा योरोपखण्ड निवासी पाश्चात्य विद्वान् भी इस विशेष्य-विशेषण सम्बन्ध को नहीं समझ सके, वर्तमान विद्वानों की कथा ही क्या है?

४. चिन्ता ५. अभ्यूहा- इन दोनों का अर्थ इस प्रकार है कि पद शब्द अक्षर समुदायों में व्यञ्जन से भिन्न स्वर अर्थात् व्यञ्जन में सामान्यतया वर्तमान स्वर के सहित विशेष्य-विशेषण अभिप्राय युक्त मन्त्रार्थ ज्ञान करने की चिन्ता का अर्थ आध्यान वा ध्यान होता है। इस विषय में चिन्ता शब्द को न्याय कैसे खोलता है- अविज्ञाततत्त्वेऽर्थे कारणोपपत्तितस्तत्त्वज्ञानार्थमूहस्तर्कः (न्याय द. १/१/४०) तथा विमर्शात्प्रभृति प्राङ्निर्णयात् यत्समीक्षणं सा चिन्ता (जिज्ञासा) (१/२/७) अर्थात् जिस पदार्थ का स्वरूप ज्ञात न हो उसको यथार्थतया जानने के लिए कारण के आरोप द्वारा तत्वज्ञान के लिए ऊहन करना 'तर्क' कहलाता है। उसी प्रकार विमर्श से लेकर निर्णय से पहले जो पक्ष प्रतिपक्ष विषय साध्य तथा साध्याभाव की जिज्ञासा है; 'चिन्ता' कहलाती है।

इस विषय में १/१/४० का भाष्य भी देखिए-

अविज्ञायमान- तत्वेऽर्थे जिज्ञासा (चिन्ता) तावज्जायते जानीयेममर्थमिति। अर्थात् अविज्ञायमान तत्व वाले अर्थ जिज्ञासा (चिन्ता) होती है कि मैं इस अर्थ को जानूँ।

अथ जिज्ञासितस्य वस्तुनो व्याहतौ धर्मौ विभागेन विमृशति किंस्विदित्यमाहोस्विन्नेत्यमिति विमृश्यमानयोः धर्मयोरेककारणो पपत्त्याऽनुजानाति सम्भवत्यस्मिन्कारणं प्रमाणं हेतुरिति कारणोपपत्त्या स्यादेवम्- नेतरदिति।..... ऊहस्तर्क इत्युच्यते (१/२/७)

अर्थात् इसके बाद जिज्ञासित वस्तु के व्याहत धर्मों के विभाग से विमर्शन करना कि यह ऐसा है या कि ऐसा नहीं है और विमृश्यमान दोनों धर्मों में एक का कारणोपपत्ति से यह अनुमान करता है कि इसमें यह कारण हो सकता है, ऐसा कारण, प्रमाण या हेतु कारणोपपत्ति से ऐसा हो सकता, अन्य नहीं हो सकता, यह ऊहन 'तर्क' कहलाता है।

न्यायबुद्धि में धर्मी की साध्यवत्ता है या उसका अभाव है इस प्रकार की चिन्ता को 'जिज्ञासा' कहते हैं। अर्थात् अविज्ञात तत्त्वार्थ में तत्त्व जिज्ञासा 'चिन्ता' और जिज्ञासित के तत्त्वज्ञानार्थ कारण को उपपत्ति से ऊह करना 'तर्क' है।

इस प्रकार निष्कर्ष यह निकला कि 'चिन्ता' और 'अभ्यूहा' दोनों एक अर्थ में प्रयुक्त नहीं हैं। अभ्यूह का अर्थ बुद्धि में भली भांति से आमिमुख्य से ऊहन करना ही है और चिन्ता का प्रयोग आध्यान वा ध्यान करना अर्थ में है। सब मंत्र प्रकरणानुकूल ही निश्चय से वक्तव्य हैं, पूर्वापर सम्बन्ध से। परन्तु विशेष ध्यातव्य है कि अर्थ ज्ञान का यह प्रत्यक्ष ऋषियों, तपस्वियों शुद्धान्तःकरण विद्वानों में ही होता है।

इस प्रकार मंत्रों में प्रत्यक्ष किए हुए पारोवर्यवित् मनुष्यों में बहुविधा से युक्त प्रशस्य उत्तम विद्वान् होता है, वही अभ्यूढ़ सुतर्क से वेदार्थ को कहने में समर्थ है- यही सिद्ध है।

**प्रश्न**- इस प्रकार आर्ष और अनार्ष को स्पष्ट कर दीजिए?

**उत्तर**- जो कोई अनूचान विद्यापारग पुरुष वेदार्थ को प्रकाशित करता है, वही आर्ष ऋषि प्रोक्त वेद व्याख्यान होता है, ऐसा मानना चाहिए और जो अल्पबुद्धि पक्षपातयुक्त मनुष्य का अभ्यूहन होता है वह अनार्ष अनृत अर्थात् झूठ होता है। यह किसी के द्वारा आदर के योग्य नहीं है। क्यों? मंत्र का अनर्थ युक्त होने से। इसके आदर से मनुष्यों का भी अनर्थ होता है।

**प्रश्न**- क्या 'निर्वक्तव्य' का अर्थ निर्वचन नहीं कर सकते?

**उत्तर**- हाँ! कुछ लोग शब्दों के निर्वचन को व्याख्यान समझकर अपने पाण्डित्य का नमूना दिखाते हैं। वस्तुतस्तु निर्वचन व्याख्यान है ही नहीं। इस निर्वचन को व्याख्यान मानना मात्र कपोल कल्पना ही है। प्रत्येक शब्द का निर्वचन व्याख्यान निश्चय के लिए किया जाता है, कहीं भी व्याख्यान निर्वचन निश्चय के लिए नहीं होता है।

ब्राह्मण ग्रन्थ वेद व्याख्यान हैं, वे केवल निर्वचन मात्र नहीं कहे जा सकते। निर्वचन व्याख्यान का अंग होता है न कि व्याख्यान निर्वचन का। शब्दकल्पद्रुम कहता है कि जैसे शब्द-लक्षण परिज्ञान सब शास्त्रों में व्याकरण से होता है, उसी प्रकार शब्द और अर्थ के निर्वचन का ज्ञान निरुक्त से होता है। अनिरुक्त मन्त्रार्थ व्याख्यातव्य नहीं होता। इसका भाव यह है कि पहले निर्वचन किया जाए फिर व्याख्यान किया जावे। अतः अपनी पूर्वाग्रह ग्रस्त भावना की पुष्टि के लिए पक्ष में शब्दों का निर्वचन कर व्याख्यान कर लेना वेद को दूषण करना ही है। अज्ञानान्धकार में निमग्न व्यक्ति कैसे वेदभाष्य कर्म कर सकता है?

अतः सिद्ध है कि वेदभाष्य करने का अधिकार केवल ऋषियों को ही है। जो ऋषि नहीं अर्थात् अनृषि अतपस्वी हैं उनको वेद भाष्य करने का अधिकार नहीं है। अन्त मैं यही कहूँगा कि-

ज्ञातुंशक्त शास्त्रविद्यां मनुष्यः आर्षग्रन्थस्याऽनुशीलेन नित्यम्।
ने वाऽनार्षग्रन्थपाठाऽनुघोषी, मेधाशून्योऽसूयकः कश्चिदेव॥

आर्ष ग्रन्थों के नित्य अनुशीलन करने से ही मनुष्य वेद रहस्य को समझने में समर्थ हो सकता है, मेधाशून्य होकर अनार्ष ग्रन्थों के पढ़ने और घोखने वाले गुणों में दोषदर्शी नहीं समझ सकते। इति

- २४३, अरावली अपार्टमेन्ट, प्रथम तल,
अलकनन्दा, नई दिल्ली- ११००१९

# त्रिफला



महाराज धन्वन्तरि के जन्म के सम्बन्ध में कहा जाता है कि अमृत मन्थन के समय वे अमृत कलश लेकर उत्पन्न हुए थे जो सर्वप्रथम वैद्यराज माने गए हैं। आयुर्वेद शास्त्र की रचना सर्वप्रथम इन्हीं के द्वारा की गई है। क्योंकि इसके द्वारा ही प्राणीमात्र निरोगी होता है इसी कारण शास्त्रों में आयुर्वेद को 'आरोग्य शास्त्र' या 'आयु का विज्ञान' कहा गया है जिसमें विभिन्न प्रकार की वनस्पतियाँ, जड़ी-बूटियाँ जो पहाड़ों, वनों-जंगलों तथा हमारे आसपास पायी जाती हैं और जिनको औषधि भी कहा जाता है, द्वारा ही शरीर में निर्मित होने वाली विभिन्न प्रकार की व्याधियों का उपचार करके मानव की आयु को बढ़ाया जाता है। इनमें ही एक औषधि 'त्रिफला' है।

त्रिफला जैसाकि नाम से ही स्पष्ट है कि तीन फलों से युक्त औषधि है। यह औषधि विभिन्न अनुपानों से विभिन्न ऋतुओं में विभिन्न रोगों में समान रूप से कार्य करती है और विलक्षण परिणाम देती है। इस औषधि में तीन घटक मुख्य माने गए हैं- प्रथम घटक हरीतिका है जिसको जनसाधारण की भाषा में हरड़ कहा जाता है, द्वितीय घटक बिभीतिकी है जिसको आम भाषा में बहेड़ा कहा जाता है तथा तीसरा घटक आमलकी है जिसको जनसाधारण की भाषा में आँवला कहा जाता है।

आयुर्वेद का मुख्य ग्रन्थ निघन्टु है। निघन्टु में कहा गया है-

**एका हरीतिका योज्या द्वौ च योज्यौ विभीतिका।**
**चत्वार्यामलकान्येव त्रिफलैषा प्रकीर्तिता।।**

अर्थात् इस औषधि के निर्माण में एक भाग हरीतिकी, दो भाग विभीतिकी तथा चार भाग आँवले का प्रयोग किया जाता है। इन तीनों घटकों को भली-भाँति साफ करके सुखाकर कूट करके चूर्ण बनाकर कपड़े से छान लिया जाता है तथा नित्यप्रति प्रयोग में लिया जाता है।

आयुर्वेद में आँवला को रसायन कहा गया है। ऐसा माना जाता है कि इसके निरन्तर प्रयोग से मनुष्य कभी रोगी नहीं होता है तथा उसको बुढ़ापा कभी नहीं आता है। महर्षि च्यवन ऋषि ने आँवले का प्रयोग करके ही अपने को चिरकाल तक युवा बनाये रखा था। अपने को चिरकाल तक युवा बनाये रखने के लिए ही उन्होंने एक अवलेह तैयार किया था जिसको च्यवनप्राश कहा जाता है। मात्र आँवला ही च्यवनप्राश का मुख्य घटक है। इसके विषय में ऐसा माना जाता है कि आज भी यदि यह इसमें प्रयोग होने वाले समस्त घटकों सहित विधिपूर्वक तैयार किया जाए और निरन्तर प्रयोग किया जाये तो मनुष्य कभी रोगी नहीं होता है, चिरकाल तक युवा बना रहता है और अपनी पूर्ण आयु को प्राप्त होता है।

आयुर्वेद शास्त्र में माना गया है कि त्रिफला एक रसायन औषधि है। इसके नियमपूर्वक नित्यप्रति ऋतु अनुपान अनुसार प्रयोग करने से मनुष्य आजीवन निरोगी बना रहता है। उसको डॉक्टरों, हकीमों के द्वार पर कभी भी नहीं जाना पड़ता है।

आयुर्वेद शास्त्र में कहा है कि-

**सितायुक्ता च शहदि हेमन्ते नागरेण च।**
**शिशिरे पिप्लीयुक्त वसन्ते मधुना सहे।।**

अर्थात् शरद ऋतु में इसको मिश्री के साथ खाया जाता है, हेमन्त ऋतु में सोंठ के साथ प्रयोग किया जाता है, शिशिर ऋतु में छोटी पीपल के साथ प्रयोग किया जाता है, वसन्त ऋतु में शहद के साथ प्रयोग किया जाता है।

**ग्रीष्मे च गुडसंयुक्ता वर्षासु लवणेन च।**
**अनेनैव विधानेन भक्षयेद्यो हरीतिकीम।।**

अर्थात् गीष्म ऋतु में गुड़ के साथ, वर्षा काल में सैंधा नमक के साथ प्रयोग किया जाता है।

आयुर्वेद शास्त्र में कहा गया है कि-

**त्रिफला शोथमेहघ्नी नाश्येद्विषमज्वरान।**
**दीपनी श्लेष्मपित्तघ्नी कुष्ठहंत्री रसायनी।**
**सर्पिर्मगुम्यां संयुक्ता सैव नेत्रामयान जयेत।**

त्रिफला चूर्ण का नित्य प्रति सेवन करने से शोथ, प्रमेह, विषमज्वर, कफ, पित्त व कुष्ठ आदि रोग जड़ से मिट जाते हैं। बल वीर्य नित्यप्रति वर्धित होता है। मन्दाग्नि दीप्त हो जाती है, अपचन नष्ट हो जाता है तथा मनुष्य निरोगी रहकर अपनी पूर्ण आयु को प्राप्त होता है। रात्रिकाल में शहद या घी के साथ सेवन करने से समस्त नेत्ररोग दूर हो जाते हैं।

- कृष्ण मोहन गोयल
१/३- बाजार कोट, अमरोहा- २४४२२१
चलभाष- ९९२७०६४१०४

# सादगी से उन्नति

## कथा सरित

अधिकांश महान् पुरुषों के जीवन चरित्र बताते हैं कि वे निर्धन थे किन्तु अपनी सादगी और परिश्रम से महान् बने। ऐसा ही एक उदाहरण यहाँ दिया जा रहा है।

कुंभकोणम कॉलेज में श्रीनिवास नामक गरीब विद्यार्थी पढ़ता था। कॉलेज का नियम था कि प्रत्येक छात्र धोती कुर्ता या दुपट्टा पहन कर आवेगा। एक दिन वर्षा के समय श्रीनिवास केवल धोती पहने आया। कुर्ता के स्थान पर शरीर पर डालने वाला दुपट्टा भी भीग गया था। अनुशासन प्रिय प्रिंसीपल ने छात्र पर चार आना जुर्माना कर दिया। श्रीनिवास ने कहा- श्रीमन् चार आना भरना मेरे लिये अशक्य है। दो आने का तो दुपट्टा बाजार में मिलता है। मैं तो उसे भी खरीदने में असमर्थ हूँ। कल की ही बात है पिताजी को उनका कोई मित्र अचार बनाने के लिये कुछ आम भेंट करने आया किन्तु माँ उन्हें स्वीकार न कर सकीं क्योंकि अचार के लिये आवश्यक नमक मसाला हम नहीं खरीद सकते थे। यह सब सुन प्रिंसीपल को अपने द्वारा सुनाये दण्ड पर खेद हुआ। शाम को वह अपने अध्ययन कक्ष में घुटने टेककर भगवान से क्षमा याचना कर रहे थे कि आज मैंने एक गरीब छात्र को दण्डित किया है। भगवान मुझे इस कठोरता के लिये क्षमा करें। बाद में उन्होंने वह जुर्माना माफ कर दिया।

वह छात्र इतना होनहार निकला कि वह लन्दन का सम्मान्य नागरिक तथा प्रिवीकौंसिल का सदस्य बना। वही प्रिंसीपल अपने आवास पर अपने उसी पुराने सादगी प्रिय विद्यार्थी का अभिनन्दन करते अत्यन्त प्रसन्न हो रहे थे जो अब डॉ. श्री निवास शास्त्री बन चुका था। उसी शाम वही छात्र अपने वाणी दाक्षिण्य और विचारों की उदारता के कारण अंग्रेज प्रजा द्वारा समादृत हो रहा था।

इस प्रकार जो मनुष्य सादगी, अपने अत्यन्त मृदु व्यवहार और परिश्रम से उन्नति के शिखर पर चलता है उसे साधनों का अभाव आगे बढ़ने से रोक नहीं सकता वह अपना जीवन सार्थक बना लेता है।

( साभार ) हितोपदेशक

---

साँस-साँस से राष्ट्र जपा, वह पगली चली गई,
श्री शारदा प्रभा प्रज्ञा की, तितली चली गई।

खो बैठा स्वराज अपनी सुषमा को असमय ही,
निर्जल को जल देने वाली, बदली चली गई।

भारतीय आख्यानों के व्याख्यान सदाव्रत सी,
माँग भरी माथे की, बड़की टिकली चली गई।

दादी-नानी-माँ-बेटी चाची-ताई-मौसी,
संज्ञा एक विशेषण अगणित तकली चली गई।

वाणी कल्याणी गुड़धाणी औचक मौन हुई,
त्वरित समेट समूची अगली पिछली चली गई।

अटल मुखर्जी को धारा अवरुद्ध हुई कहने,
पूरी संसद उजलाती वह बिजली चली गई।

सुख में दुःख में सबसे आगे सबके संग रही,
मेरुदण्ड के साथ मनीषी हँसली चली गई।

दुःख में दुःखी
विनीत भाई-सारस्वत मोहन मनीषी

# समाचार

## वैदिक एवं आधुनिक विज्ञान महोत्सव

उक्त अभिनव आयोजन श्री वैदिक स्वस्ति पंथा न्यास, वेद विज्ञान मंदिर, भागल भीम, भीनमाल, जिला जालोर के तत्वावधान में आश्रम स्थल पर ही दिनांक ४ से ६ अक्टूबर २०१६ में आयोज्य है। इस अवसर पर, विश्वभर के आधुनिक वैज्ञानिकों को चिन्तन हेतु विवश करने वाली 'वैदिक रश्मि थ्योरी' के उद्घाटक वेद वैज्ञानिक आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक द्वारा वेद विज्ञान के विभिन्न पहलुओं को संस्पर्श करते हुए अनेक उद्बोधन प्रदान किए जायेंगे।

इस अवसर पर 'पर्यावरण संकट एवं समाधान', 'राष्ट्रीय समस्याएं एवं समाधान', 'वैदिक एवं आधुनिक विज्ञान' तथा 'वेदों का यथार्थ स्वरूप' विषयों पर सार्थक चर्चा की जायेगी। आर्य जगत् के अनेक संन्यासी, विद्वान्, पदाधिकारी इस अवसर पर उपस्थित हो रहे हैं जिनमें स्वामी श्रद्धानन्द जी सरस्वती, अलीगढ़, न्यायमूर्ति श्री सज्जनसिंह जी कोठारी, पूर्व लोकायुक्त राजस्थान, श्रीमान् सुरेश चन्द आर्य, प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली, श्री दीनदयाल जी गुप्ता, चेयरमेन, डॉलर फाउण्डेशन, कोलकाता एवं प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, बंगाल, डॉ. सत्यमित्र जी आर्य, डॉ. सत्यप्रकाश जी मेहरा, पर्यावरण वैज्ञानिक, श्री विनीत कुमार जी आर्य, (आई.आर.एस.), श्री विनीत जी गुप्ता, कर्नल पूनमसिंह जी राठौड़, प्रोफेसर रामगोपाल जी, पूर्व निदेशक, डीआरडीओ, रक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, प्रो. बसन्त कुमार जी मदनसुरे विशेषज्ञ अपारम्परिक ऊर्जा, डॉ. संदीप कुमार सिंह जी, भौतिक वैज्ञानिक, डॉ. वेदप्रकाश जी आर्य, भौतिक वैज्ञानिक, श्री आनन्द कुमार आर्य पूर्व प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, बंगाल, टाण्डा, श्री अशोक आर्य, खाद्य वैज्ञानिक एवं कार्यकारी अध्यक्ष,श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, उदयपुर, श्री विशाल आर्य, उपाचार्य, वैदिक और आधुनिक भौतिकी अनुसंधान संस्थान, डॉ. टी.सी. डामोर, पूर्व आई.जी. पुलिस विभाग एवं पूर्व कुलपति,राजीव गांधी जनजाति विश्वविद्यालय आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

इन तीन दिनों में कई सत्रों में अनेक सारगर्भित उद्बोधन प्रस्तुत किए जायेंगे। भजनोपदेश का दायित्व श्री केशवदेव जी शर्मा, सुमेरपुर द्वारा निभाया जायेगा। - टी.सी.डामोर, मंत्री, न्यास

## आर्य शूटिंग रेंज का उद्घाटन

आर्य समाज के प्रमुख नेता स्मृतिशेष श्री छोटूसिंह जी आर्य की स्मृति में आर्य कन्या विद्यालय, स्वामी दयानन्द मार्ग, अलवर में ३ अगस्त

२०१६ को शूटिंग रेंज का उद्घाटन श्री सुरेश चन्द्र आर्य, प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली द्वारा किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री जगदीश प्रसाद गुप्ता, प्रधान आर्य कन्या विद्यालय, समिति अलवर द्वारा की गई। इस अवसर पर डॉ. राजपाल सिंह, शूटिंग कोच, बागपत, एवं श्री अखिलेश प्रतापसिंह, शूटिंग कोच, बीकानेर की उपस्थिति उल्लेखनीय रही। - प्रदीप कुमार आर्य, मंत्री

## स्मृति भवन, जोधपुर का वार्षिकोत्सव २८ सितम्बर से २ अक्टूबर २०१९ तक

महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति भवन न्यास जोधपुर के तत्वावधान में १३६वां ऋषि स्मृति सम्मेलन दिनांक २८ सितम्बर से २ अक्टूबर २०१६ तक स्मृति भवन परिसर में आयोजित किया जा रहा है। इस अवसर पर आर्य जगत् के मूर्धन्य विद्वानों की वक्तृता के साथ साथ प्रख्यात् भजनोपदेशकों की भजन लहरी से भी श्रोता लाभ उठा सकेंगे। इस अवसर पर आयोज्य वेद गोष्ठी में सुयोग्य विद्वान् अपने शोध पत्र का वाचन करेंगे। - किशन लाल गहलोत, मंत्री

## सत्यार्थ प्रकाश के नवीन तेलगु संस्करण का विमोचन

आर्य प्रतिनिधि सभा, तेलंगाना, हैदराबाद के तत्वावधान में महर्षि दयानन्द कृत अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश के नवीन तेलगु संस्करण का लोकार्पण समारोह दिनांक ४ अगस्त २०१६ को माननीय श्री जी. किशन रेड्डी जी, गृह राज्यमंत्री, भारत सरकार के करकमलों द्वारा पंडित नरेन्द्र भवन, राज मोहल्ला, हैदराबाद में सम्पन्न हुआ। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता, सभा प्रधान श्री लक्ष्मणसिंह जी ने की और संचालन सभामंत्री प्रो. विट्ठलराव आर्य द्वारा किया गया। इस अवसर पर आर्य जगत् के अनेक विद्वान् एवं गणमान्यजन उपस्थित थे।

- विट्ठलराव आर्य

## श्री राकेश आर्य किए गए राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित

नई दिल्ली। अखिल भारत हिन्दू महासभा के वरिष्ठ राष्ट्रीय उपाध्यक्ष और 'उगता भारत' के संपादक श्री राकेश कुमार आर्य को शिक्षा पुरस्कार योजना वर्ष २०१७ के अंतर्गत रु.१००००० के नगद राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। भारत सरकार के केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय द्वारा यह पुरस्कार श्री आर्य को उनकी प्रसिद्ध कृति भारत के १२३५ वर्षीय स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास पर दिया गया है। जिसमें उन्होंने इस तथ्य और सत्य को प्रतिपादित किया है कि भारत ने विदेशी परतंत्रता को कभी भी हृदय से आत्मसात नहीं किया, अपितु वह सदैव ही विदेशी पराधीनता के विरुद्ध बगावत पर उतारू रहा और स्वतंत्र होने के लिए संघर्ष करता रहा। इस प्रकार श्री आर्य ने वर्त्तमान इतिहास की उस प्रचलित कालिमा को धोने का प्रयास किया है जिसमें भारत के लोगों को भारत के ही इतिहासकारों ने कायर दिखाने का कार्य शर्मनाक ढंग से किया है।

## आर्य समाज, हिरणमगरी का वेद प्रचार सप्ताह

आर्य समाज, हिरणमगरी, सेक्टर ४, उदयपुर के तत्वावधान में वेद प्रचार सप्ताह का आयोजन १८ अगस्त से २४ अगस्त २०१६ तक सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर गांधीधाम, गुजरात से प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् आचार्य चन्द्रेश जी आर्य के प्रवचन एवं मधुवनी बिहार से पधारे भजनोपदेशक श्री रामदयाल जी आर्य के भजनोपदेश हुए। कार्यक्रम प्रातःकाल एवं सायंकाल दोनों समय चला। - भूपेन्द्र शर्मा, मंत्री, आर्य समाज

# हलचल

### नहीं यह सच नहीं झूठ है।

गत लगभग एक वर्ष से सोशल मीडिया पर विशेषकर वाट्सअप और फेसबुक पर यह समाचार चलाया जा रहा है कि माइक्रोवेव ऑवन स्वास्थ्य के लिए अत्यन्त हानिकारक है इसलिए जापान सरकार ने सभी

माइक्रोवेव ऑवन निर्माताओं को निर्देश दे दिए हैं कि तुरन्त प्रभाव से माइक्रोवेव ऑवन का उत्पादन बन्द करें और उपलब्ध सभी का फौरन निस्तारण करें। जो नागरिक तथा संगठन इसकी अनुपालना नहीं करेंगे वे दण्डनीय होंगे। हमने यह समाचार पूरा जो कि अंग्रेजी में था, पढ़ा। इसको इस प्रकार से लिखा गया है कि पाठक को विश्वास हो जाता है कि किसी सुशिक्षित वैज्ञानिक प्रवृत्ति वाले व्यक्ति द्वारा लिखा गया है और यह निश्चित रूप से सही है इसमें हिरोशिमा यूनिवर्सिटी के अनुसंधान का संदर्भ दिया गया है। आजकल माइक्रोवेव ऑवन घर-घर में उपयोग में आते हैं। अतः एक भ्रम की स्थिति लोगों के मन मानस में उत्पन्न हो गई है। हमने गूगल पर जाकर जब तथ्यात्मक अन्वेषण किया तो पता चला कि यह समाचार पूर्णतः गलत है। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने अभी तक माइक्रोवेव ऑवन के इस प्रकार के हानिकारक प्रभाव को उद्घाटित नहीं किया है। हाँ! यह तो है कि जिस प्रकार से रेडियो तरंगों के और माइक्रोवेव के जो भी हानिकारक प्रभाव हैं वे संभव हैं। अतः इन उपकरणों को सावधानीपूर्वक तो उपयोग करना चाहिए ही। परन्तु उक्त समाचार नितान्त असत्य है। - अशोक आर्य

### क्रियात्मक योग प्रशिक्षण शिविर

वानप्रस्थ साधक आश्रम, आर्यवन, रोजड़ के तत्वावधान में ३ से १० नवम्बर २०१९ तक क्रियात्मक योग प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया जा रहा है। अधिक जानकारी के लिए इच्छुकजन फोन नम्बर २७७०-२८७४१७ अथवा चलभाष- ९४२७०५९५५० पर सम्पर्क कर सकते हैं।

### आर्य लेखक परिषद् सम्मेलन

आर्य लेखक परिषद्, आर्य लेखकों, साहित्यकारों, पत्रकारों और बुद्धिजीवियों की संस्था है। परिषद् के तत्वावधान में ७ से ८ सितम्बर २०१९ तक द्विदिवसीय अखिल भारतीय साहित्यकार सम्मेलन ऋषि उद्यान, परोपकारिणी सभा, अजमेर में आयोजित किया जा रहा है। इस अवसर पर वैदिक वांग्मय के अलावा विभिन्न साहित्यिक विषयों पर खुलकर चर्चा होगी। - अखिलेश आर्येन्दु, मंत्री आर्य लेखक परिषद्

### सफाई कर्मचारी आयोग के अध्यक्ष का स्वागत व सम्मान

न्यास के जनसम्पर्क सचिव श्री विनोद राठौड़ व उनके सुपुत्र श्री रवीन्द्र राठौड़ राष्ट्रीय सफाई कर्मचारी आयोग के अध्यक्ष श्री मनोहर वेलजी भाई के उदयपुर आगमन के अवसर पर न्यास की ओर से उनका स्वागत करते हुए।

### प्रो.वेद प्रकाश शास्त्री सम्मानित

दीपशिखा साहित्यिक एवं सांस्कृतिक मंच, ज्ञानोदय अकादमी, हरिद्वार द्वारा आयोजित सम्मान समारोह में गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के पूर्व आचार्य एवं उपकुलपति वैदिक विद्वान् महामहोपाध्याय प्रो. वेद प्रकाश शास्त्री को वर्ष २०१९ के लिए दीपशिखा सम्मान से सम्मानित किया गया। न्यास एवं सत्यार्थ सौरभ परिवार की ओर से आचार्य जी को बहुत-बहुत बधाई एवं शुभकामनाएँ। - अशोक आर्य

### स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती विरक्त मण्डल के प्रधान

आर्य समाज के समस्त संन्यासियों, वानप्रस्थियों एवं नैष्ठिक ब्रह्मचारियों के संगठन विरक्त मंडल का अधिवेशन दिनांक १५ से १७

जुलाई १९ तक स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ आश्रम टिटोली, जिला रोहतक, हरियाणा में आयोजित हुआ जिसमें आर्य समाज के जाने माने संन्यासी, अनेक गुरुकुलों के संस्थापक एवं संचालक पूज्य स्वामी प्रणवानन्द जी सरस्वती को सर्व सम्मति से वैदिक विरक्त मंडल का प्रधान चुना गया। न्यास एवं सत्यार्थ सौरभ परिवार की ओर से स्वामी जी को बहुत बहुत बधाई एवं शुभकामनाएँ। - अशोक आर्य

### सत्यार्थ प्रकाश पहेली - ०७/१९ के विजेता

सत्यार्थ प्रकाश पहेली- ०७/१९ के चयनित विजेताओं के नाम इस प्रकार हैं- श्रीमती सरोज वर्मा; जयपुर (राज.), श्रीमती उषा आर्या; उदयपुर (राज.), डॉ. राजबाला कादियान; करनाल (हरियाणा), श्री पुरुषोत्तम लाल मेघवाल; उदयपुर (राज.), श्री श्रृयांशु गुप्ता; मनियाँ, श्रीमती किरण आर्या; कोटा (राज.), श्री विनोद प्रकाश गुप्त; दिल्ली, श्रीमती निर्मल गुप्ता; फरीदाबाद (हरियाणा), श्री गोरवर्धन लाल झंवर; सिहोर (म.प्र.), श्री इन्द्रजित् देव; यमुना नगर (हरियाणा), श्री श्याम मोहन गुप्ता; विजय नगर (इन्दौर), श्री अनन्त लाल उज्जैनिया; टी. टी. नगर (भोपाल), श्री महेश चन्द्र सोनी; बीकानेर (राज.), प्रधान जी; आर्यसमाज, बीकानेर (राज.), श्रीमती उषा देवी सोनी; बीकानेर (राज.), श्री यज्ञसेन चौहान; विजय नगर (राज.), श्रीमती सुनिता सोनी; बीकानेर (राज.), श्रीमती रूपा देवी; बीकानेर (राज.), श्री गणेशदत्त गोयल; बुलन्दशहर, श्री फूलसिंह यादव; मुराद नगर, श्री किशनाराम आर्य; बिलू, श्री रमेश चन्द्र राव; मन्दसौर (म.प्र.), श्री रामदत्त आर्य; मनियाँ (धोलपुर), सुप्रिया चावला; जालन्धर, श्री कृष्ण गोपाल; आर्यसमाज-विजयनगर, कंचन सोनी; बीकानेर (राज.)।

सत्यार्थ सौरभ के उपर्युक्त सभी सुधी पाठकों को हार्दिक बधाई।

**ध्यातव्य- पहेली के नियम पृष्ठ १३ पर अवश्य पढ़ें।**

# ईश्वर का स्वरुप

**ईश्वर एक है और उसका अस्तित्व निश्चित रूपेण है। यह सिद्ध होने के पश्चात् प्रश्न उठता है कि ईश्वर है कैसा? उसका स्वरूप क्या है? अनीश्वरवादियों की बात जाने दें परन्तु ईश्वरवादियों में भी ईश्वर के स्वरूप को लेकर इतनी मत भिन्नता आज पायी जाती है कि ईश्वर के स्वरूप के ठीक-ठीक निर्धारण में व्यक्ति भ्रमित है। उसे भ्रमित करने में तथाकथित अल्प पठित-स्वार्थी गुरुओं का बड़ा हाथ है। कुछ उसे निराकार तथा कुछ साकार मानते हैं। कुछ सर्वव्यापक तथा कुछ एकदेशीय अर्थात् सातवें आसमान पर, क्षीरसागर में, स्वर्ग में, कैलाश पर आदि-आदि मानते हैं। ऐसी स्थिति में प्रभु दर्शन किस प्रकार हो? आप कल्पना करें कि आप यह तो मानते हैं कि श्री रामलाल जी हैं पर यह नहीं जानते कि वे कहाँ रहते हैं? कैसे दिखते हैं? क्या कार्य करते हैं? आदि-आदि। तो क्या आप उनसे मिल सकते हैं? कदापि नहीं।** इसी प्रकार समस्त ईश्वरवादी भी ईश्वर के अस्तित्व में पूर्ण विश्वास रखने के पश्चात् भी तब तक उससे मिलने का उद्योग नहीं कर सकते जब तक कि उसके स्वरूप को न पहचान लें। इस पहचान के बिना उनके समस्त प्रयास मृग मरीचिका ही सिद्ध होंगे। यही आज हो रहा है।

**उपासना केवल ईश्वर की-**

**आ पपौ पार्थिवं रजो बद्बधे रोचना दिवि।**
**न त्वावाँ इन्द्र कश्चन न जातो न जनिष्यतेऽति विश्वं ववक्षिथ॥**

- ऋगवेद १/८१/५

हे मनुष्यों! तुम सब, जिसके द्वारा सम्पूर्ण संसार रचकर और उसे व्याप्त करके उसका पालन किया जाता है, जो अजन्मा और अद्वितीय है तथा जिसके तुल्य कोई भी वस्तु नहीं है, तो उससे अधिक कोई कैसे हो? उसी (ईश्वर) की निरन्तर उपासना करो। इससे भिन्न किसी वस्तु को (उपासना के लिए) न ग्रहण करना चाहिये और न उसकी गणना करनी चाहिये।

**इसलिए महर्षि दयानन्द सरस्वती महाराज ने अपने ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश के प्रथम समुल्लास में ईश्वर के नामों की व्याख्या के सन्दर्भ में उसके गुण-कर्म-स्वभाव को काफी स्पष्ट कर दिया है तथापि सप्तम समुल्लास में इस विषय के महत्त्व को समझते हुए पुनः वेदार्ष प्रमाणों व युक्ति, तर्क से समन्वित ईश्वर के स्वरूप का दिग्दर्शन किया है। यहाँ हम कुछ प्रमुख बातों पर ही विचार करेंगे।**

**प्रिय पाठकों! सर्वप्रथम यह देखना चाहिए कि ईश्वर के चार** कार्य ऐसे हैं जिन्हें उसके अतिरिक्त ब्रह्माण्ड की कोई शक्ति सम्पादित नहीं कर सकती। अतएव सीधी कसौटी यह है कि जो इन कार्यों को सम्पादित करने की क्षमता रख सके वही ईश्वर हो सकता है। ये कार्य हैं सृष्टि की उत्पत्ति, इसे बनाए रखना, इसका प्रलय करना तथा जीवों को उनके कर्मानुसार फल प्रदान करना। उपरोक्त कार्य वही सत्ता कर सकती है जो अनादि हो, निराकार हो, सर्वव्यापक हो, सर्वज्ञ हो, सर्वशक्तिमान हो, स्वयम्भू हो।

इन सभी गुणों में अन्तर्सम्बन्ध है। यथा जो निराकार नहीं होगा वह साकार होने से एकदेशीय होगा अर्थात् सर्वव्यापक नहीं होगा, जब सर्वव्यापक नहीं होगा तो एक ओर सर्वज्ञ नहीं होगा तो दूसरी ओर जहाँ अभाव होगा वहाँ क्रिया न कर सकेगा, अतएव सर्वशक्तिमान भी न हो सकेगा। अतएव उक्त सारे गुण ईश्वर में एक साथ ही घटेंगे। एक भी गुण की न्यूनता अथवा भिन्नता न हो सकेगी।

**सर्वव्यापक-**

**अनच्छये तुरगातु जीवमेजद् ध्रुवं मध्य आ पस्त्यानाम्।**
**जीवो मृतस्य चरति स्वधाभिरमर्त्यो मर्त्येना सयोनिः॥**

- ऋ. १/१६४/३०

जो चलायमान पदार्थों में स्थिर, अनित्यों में नित्य और व्याप्तों में व्यापक ईश्वर है। उसकी व्यापकता से रहित अतिसूक्ष्म वस्तु भी नहीं है, इसलिये सब जीवात्माओं को इस अन्तर्यामी रूप से स्थित (ईश्वर) की नित्य उपासना करनी चाहिये।

**ईश्वर निराकार है:-** आकार वाला वह पदार्थ होता है जिसमें लम्बाई, चौड़ाई, गहराई, ऊँचाई, वजन, माप, तोल, रंग, रूप हो। पर ईश्वर में यह परिभाषा न घटने से वह निराकार है। आकार जड़ पदार्थ का ही हो सकता है। जड़ पदार्थों में संयोग होता है। सूक्ष्म परमाणु जुड़ते हैं फलतः आकार बनता है। चेतन में संयोग नहीं फलतः आकार रहित या निराकार होता है। स्मरण रखें चेतन आकार दे सकता है पर स्वयं निराकार रहता है। आप कहेंगे कि चेतन मनुष्य आकार वाला होता है। पर यहाँ ध्यान देने वाली बात यह है कि आकार शरीर का होता है जो कि जड़ तत्त्वों के संयोग से बने होने के कारण जड़ ही है। पर चेतन निराकार जीवात्मा की शक्ति से संचालित होने के कारण चेतन प्रतीत होता है। अतएव चेतन सत्ता परमात्मा निराकार ही है।

- अशोक आर्य
नवलखा महल, गुलाब बाग

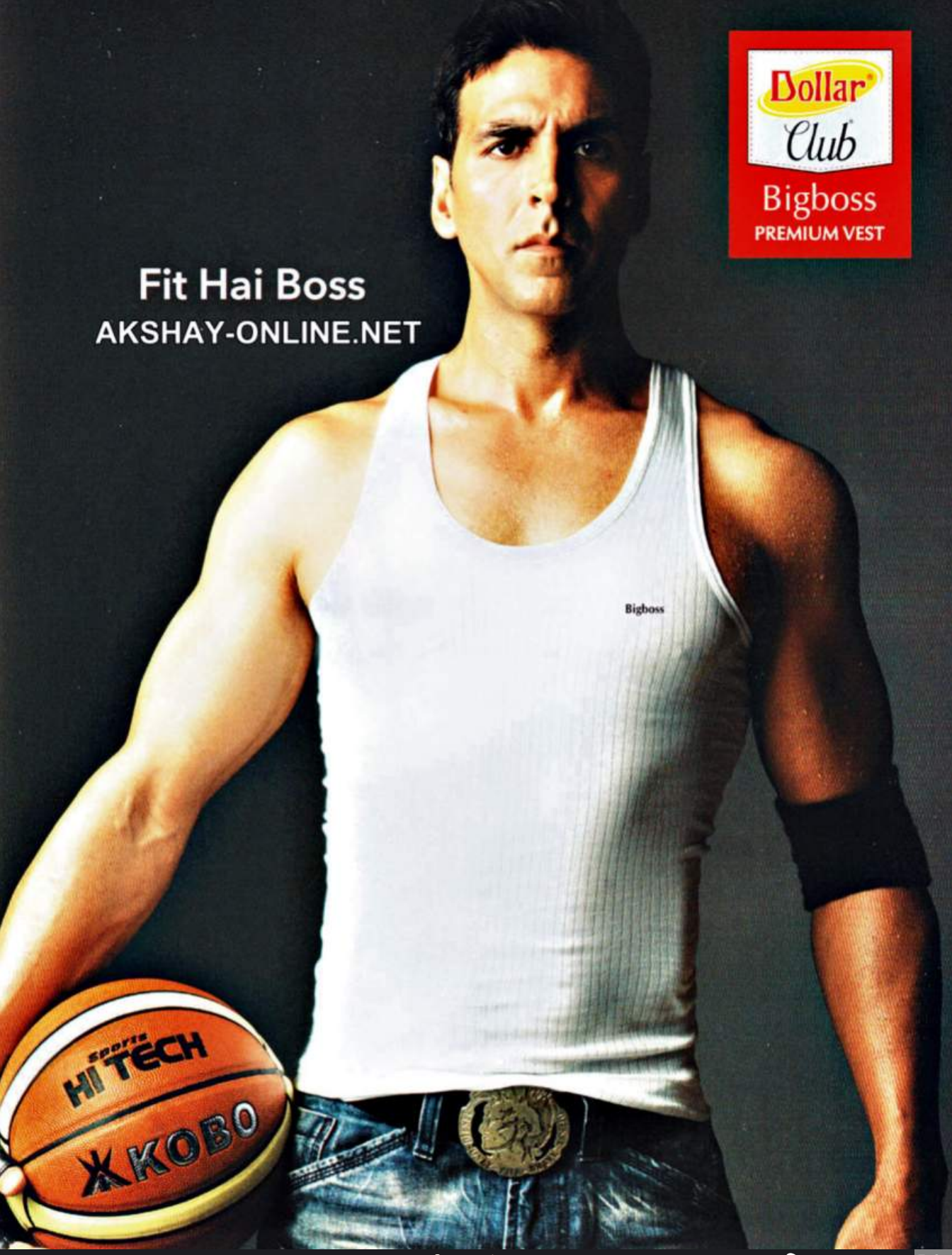
Dollar
Club
Bigboss
PREMIUM VEST
Fit Hai Boss
AKSHAY-ONLINE.NET
Bigboss
Sports
HI TECH
KOBO

RNI Registration No. RAJHIN/2012/47777 September-2019 Postal Registration No. RJ/UD/29-107/2019-2021

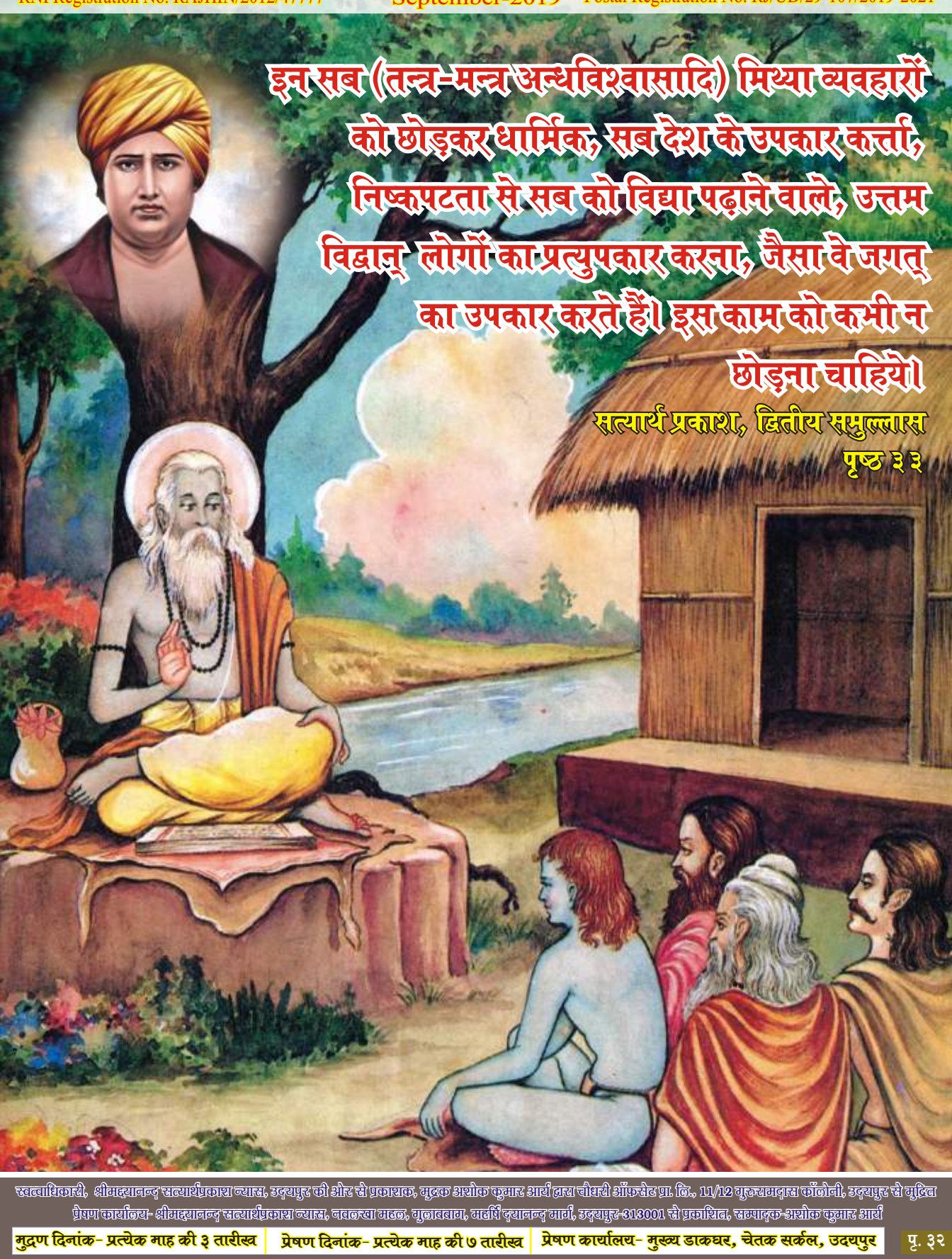

इन सब (तन्त्र-मन्त्र अन्धविश्वासादि) मिथ्या व्यवहारों को छोड़कर धार्मिक, सब देश के उपकार कर्त्ता, निष्कपटता से सब को विद्या पढ़ाने वाले, उत्तम विद्वान् लोगों का प्रत्युपकार करना, जैसा वे जगत् का उपकार करते हैं। इस काम को कभी न छोड़ना चाहिये।

सत्यार्थ प्रकाश, द्वितीय समुल्लास
पृष्ठ ३३

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द् सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुत्वमद्रास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित प्रेषण कार्यालय- श्रीमद्दयानन्द् सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द् मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य

मुद्रण दिनांक- प्रत्येक माह की ३ तारीख | प्रेषण दिनांक- प्रत्येक माह की ७ तारीख | प्रेषण कार्यालय- मुख्य डाकघर, चेतक सर्कल, उदयपुर